

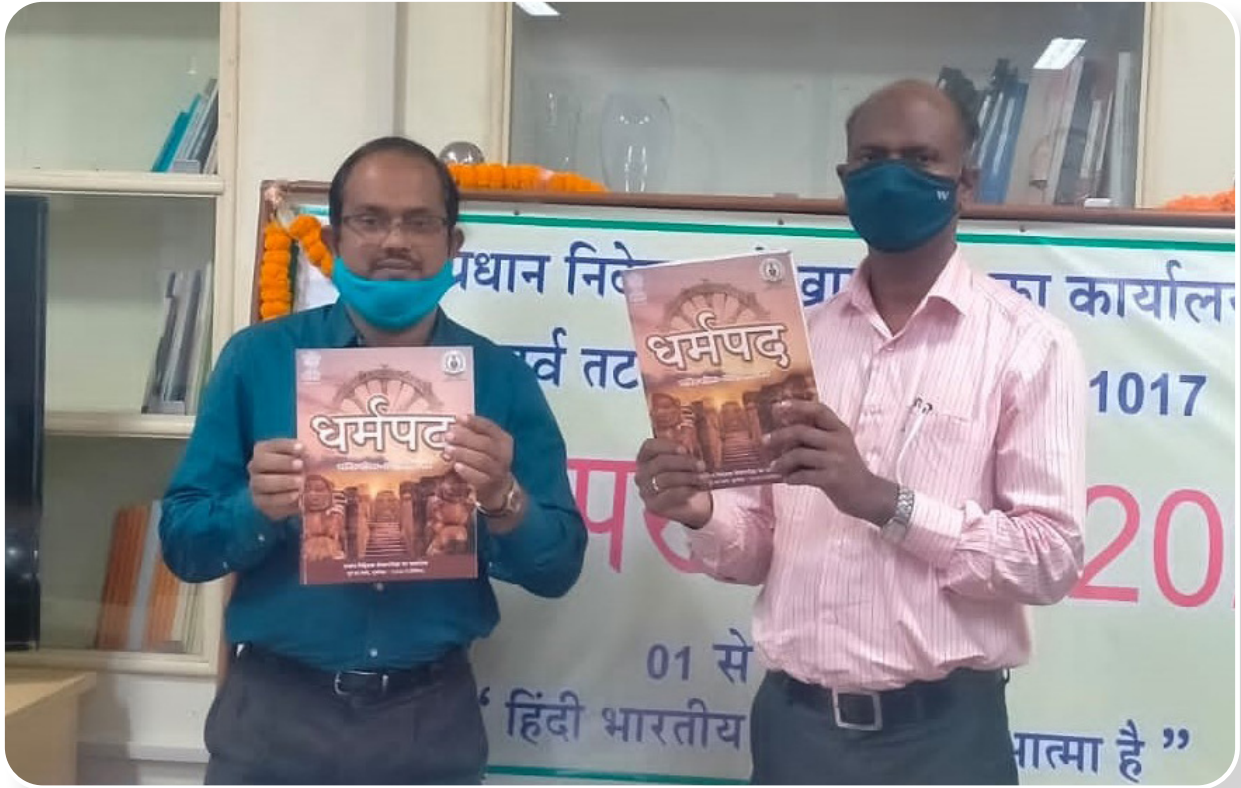
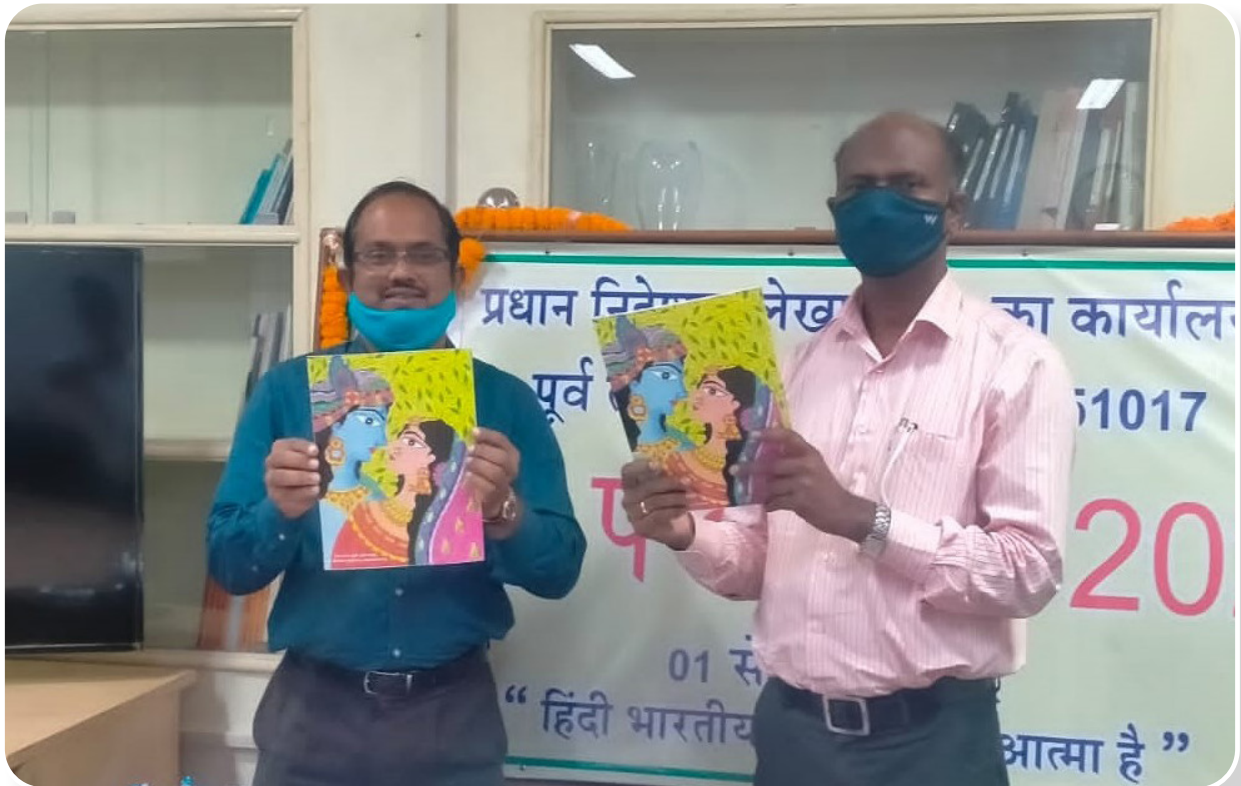


धर्मपद

वार्षिक पत्रिका - 2023, बारहवाँ अंक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर - 751017(ओड़िशा)

‘धर्मपद’ के 10वें अंक का विमोचन





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

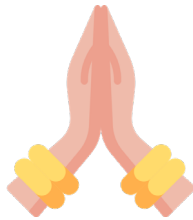
वर्ष 2023

अंक -12

अवधि - वार्षिक

में

हार्दिक अभिनंदन



महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन

सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर

भुवनेश्वर-751017 (ओड़िशा)

मूल्य-राजभाषा के प्रति निष्ठा

धर्मपद पत्रिका परिवार



मुख्य संरक्षक

श्री कुलवंत सिंह
महानिदेशक लेखापरीक्षा



संरक्षक

श्री दुसासन बेहेरा
निदेशक



संपादक

सुश्री कीर्ति श्री
हिंदी अधिकारी



उपसंपादक

श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक



विशेष सहयोग

श्री शशि रंजन
सचिव, महानिदेशक लेखापरीक्षा



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, चंद्रशेखरपुर भुवनेश्वर-751017
ई मेल : pdarlyecoastr@cag.gov.in
दूरभाष : 0674- 2301045

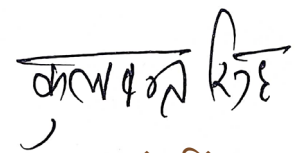


श्री कुलवंत सिंह
महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे
संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के 12वें अंक के प्रकाशन पर मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका का नियमित प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारी निष्ठा का परिचायक है।

सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हम सभी का यह दायित्व है कि हम अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के विकास में अपना यथोचित योगदान दें। राजभाषा की प्रगति की दिशा में पत्रिका एक सशक्त माध्यम है, जिसमें कार्मिकों की रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता परिलक्षित होती है। भाषा जब भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती है, तब वह पूर्णतः अपनी हो जाती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'धर्मपद' पत्रिका अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल रहेगी।

पत्रिका का 12वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल के सदस्यों तथा रचनाकारों को उनके योगदान के लिए बधाई तथा शुभकामनाएँ।


(कुलवंत सिंह)



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, चंद्रशेखरपुर भुवनेश्वर-751017
ई मेल : ddrlyecoastr@cag.gov.in
दूरभाष : 0674-2303511



श्री दुसासन बेहेरा

निदेशक , पूर्व तट रेलवे

संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के 12वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए गौरव की बात है। हिंदी विश्व की उन्नत एवं वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है, जो भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के साथ-साथ भारत की प्रगतिशीलता को भी अभिव्यक्त करने में सक्षम है। राजभाषा हिंदी भारत की राष्ट्रीय एकता की वाहक है। अपनी सरल एवं सहज अभिव्यक्ति क्षमता के कारण हिंदी हिंदीतर भाषियों को भी समान रूप से प्रिय है। यही कारण है कि भारत की भाषायी विविधता के बाद भी हिंदी सामूहिक रूप से समूचे भारत का प्रतिनिधित्व करती है।

हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के 12वें अंक का प्रकाशन राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति की दिशा में हमारा एक और प्रयास है। मुझे आशा है कि 'धर्मपद' का 12वाँ अंक कार्यालय के कार्मिकों को ही नहीं अपितु अन्य कार्यालय के पाठकों को भी अभिभूत करेगा। मैं उन सभी रचनाकारों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जो नियमित रूप से लेखन कार्य से जुड़े रहते हैं। मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ जिनके प्रयासों से इस पत्रिका को स्वरूप मिला।

शुभकामनाओं सहित!

(दुसासन बेहेरा)

संपादक की कलम से



सुश्री कीर्ति श्री
हिंदी अधिकारी

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' का 12वाँ अंक आपको समर्पित करते हुए बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। कार्यालय की इस पत्रिका में विविध विषयों पर मौलिक रचनाओं का प्रकाशन होता है।

हिंदी एक भाषा के रूप में हमारे देश की पहचान है। यह भारतीय जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहिका है। आधुनिक भारत में हिंदी व्यवसाय एवं व्यापार की भी भाषा बन चुकी है। वैश्वीकरण के इस युग में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी का तेजी से प्रचार-प्रसार हुआ है। हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी कारण तकनीकी की भाषा के रूप में भी हिंदी आसानी से प्रयोग हो रही है। हिंदी में कार्य करना अब काफी सरल है। भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था एवं बड़े बाजार के कारण भी हिंदी का विस्तार बढ़ता जा रहा है। ऐसे सकारात्मक वातावरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हम सभी का योगदान इस भाषा-यज्ञ में एक महत्वपूर्ण आहुति सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिनके सहयोग से 'धर्मपद' पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप सभी के सहयोग की अभिलाषी हूँ।

सभी पाठकों से यह अनुरोध है कि पत्रिका के लिए अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया हमें दें ताकि हम आगामी अंकों को और बेहतर बना सकें।

सधन्यवाद,

(कीर्ति श्री)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)	श्री विक्रान्त आनंद, स.लेप.अ.	1
2	इनफिरियरिटी कॉम्प्लेक्स का शिकार	सुश्री प्रेरणा किशोर	3
3	पतझड़	श्री चंदन कुमार, स.लेप.अ.	5
4	बोर्डिंग स्टेशन	श्रीमती रोमा कुमारी	6
5	किसान और न्यूनतम समर्थन मूल्य	श्री सौरभ दास, सहा. पर्यवेक्षक	9
6	मूव एनीटाईम	श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	12
7	सेल का खेल	सुश्री ऐश्वर्या परिडा	15
8	जिन्दगी	श्री बिमल टोपनो, वरि. लेप.	16
9	मेरे पापा	श्री सूर्यवंशी मुदुली	16
10	वनस्पति और उसके फायदे	श्री राजु कुमार, डी.ई.ओ.-“बी”	17
11	आत्मीयता	श्री कृष्णा कुजूर, लिपिक	20
12	सीखो	श्रीमती अन्नपूर्णा षडंगी	20
13	जीवन: एक अनमोल उपहार	श्री निरुपम कर्माकार, लेखापरीक्षक	21
14	एक रुपया	सुश्री निहारिका साहू	23
15	घमंडी कौआ	सुश्री क्रितीका हाजरा	24
16	जीत हासिल करना है	सुश्री श्रद्धा राउत	24
17	परिवार और माँ	सुश्री अन्नपूर्णा नायक	25
18	सपनों को पूरा करने की चाहत	श्रीमती पूजा कुमारी	27
19	आदत से लाचार मेंढक	सुश्री ज्योत्रीमई पी. मुदुली	27
20	साथ निकले थे सपने बुनने	श्री निरंजन परिडा, स.लेप.अ.	28
21	क्रोध	श्रीमती नीतु चंद्रा	29
22	पढ़	श्री विभास चन्द्र, स.लेप.अ.	31
23	नालंदा विश्वविद्यालय	श्री मनीष कुमार, स.लेप.अ.	32
24	फासले	श्री नवीन कुमार चौबे, स.लेप.अ.	36
25	जाने	सुश्री अनुष्का चौबे	37
26	भोलू का भोलापन	सुश्री स्वागतिका साहु	38
27	संदेह	श्री बी. रामचन्द्र राव, वरि. लेप.	41
28	अनुशासन	श्री दीपक कुमार दास, व.लेप.अ.	43
29	क्या है दोस्ती?	सुश्री बी. श्यामला	45
30	एक कविता हर माँ के नाम	श्री स्वास्तिक षडंगी	46
31	प्रकृति	सुश्री शुभलक्ष्मी नायक	46
32	आपके पत्र		47
33	हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की कुछ झलकियाँ		51

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)



श्री विक्रान्त आनंद

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैसा कि शब्द से ही पता चलता है, बुद्धिमत्ता को कृत्रिम रूप से बनाया जाता है ताकि मशीनों को मनुष्यों की तरह व्यवहार करने के लिए तैयार किया जा सके। मशीनें हमारे काम को सरल और आसान बनाती हैं लेकिन अगर मशीनों में इंसान जैसी समस्याओं को सुलझाने और परिणाम देने की क्षमता आ जाती है तो यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहलाती है। यह कंप्यूटर विज्ञान का ही अग्रिम चरण है। मशीनों में मानव बुद्धिमत्ता की विभिन्न विशेषताओं को विकसित करने पर ध्यान देने की दिशा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को परिभाषित किया जा सकता है। इन विशेषताओं को विभिन्न डेटा, बुद्धिमत्तापूर्ण एल्गोरिदम के माध्यम से विकसित किया जा सकता है जिन्हें इनपुट के रूप में उपयोग किया जाता है। वर्तमान में हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ तमाम तरह के उपकरणों से घिरे हुए हैं, उदाहरण के लिए कंप्यूटर, मोबाइल, बायोसेंसर, वीडियो गेम आदि। व्यापक रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास से मानव जाति को विभिन्न पहलुओं में लाभ होगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेंस है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह इंटेलिजेंट तरीके से सोचने वाला सॉफ्टवेयर बनाने का एक तरीका है। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिये 'एल्वी' नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ के देशों ने भी 'एस्पिट' नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की थी। इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, जैसे-Very Large Scale Integrated सर्किट का विकास करने के लिये एक संघ 'माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी' की स्थापना की।

वर्तमान बजट में भारत सरकार ने फिफ्थ जनरेशन टेक्नोलॉजी स्टार्ट अप के लिये 480 मिलियन डॉलर का प्रावधान किया है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग इंटरनेट ऑफ थिंग्स, 3-D प्रिंटिंग और ब्लॉक चेन शामिल हैं। इसके अलावा भारत सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, डिजिटल मैनुफैक्चरिंग, बिग डाटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डाटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।

चीन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर केंद्रित एक अनुसंधान प्रयोगशाला खोलने के बाद गूगल ने अपना एक और कार्यालय खोला। चीन 1980 से ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर काम करना शुरू कर दिया है। चीन का अपना AI का आउटपुट 2030 तक 140 डॉलर करने का प्रयास है। चीन और हमारे देश का सम्बन्ध कैसा है आप सभी जानते हैं इसलिए चीन का AI में प्रगति हमारे देश के लिए खतरा है। इस विज्ञान का हमारे देश के विरुद्ध गलत तरीके से इस्तेमाल हो सकता है। भारत को भी AI पर ज्यादा काम करना चाहिए ताकि किसी भी समय दुश्मन का सामना कर सकें। एलोन मस्क का कहना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नाभिकीय बम से भी खतरनाक है क्योंकि ये बहुत तेजी से विकसित हो रहा है। बनाने वाली कंपनी को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को कहाँ तक विकसित करना है ये पता नहीं है और कुछ ही समय में ये मनुष्य से ज्यादा तेज और समझदार हो जायेगा जो कि मानवीय सभ्यता के लिए खतरा हो सकता है। जैसे Xenobot नाम का एक रोबोट बनाया गया है जो केवल 1mm के बराबर है और इसका उपयोग उपचार के लिए किया जाता है। अगर इसी का उपयोग कोई देश (जैविक युद्ध के लिए) किसी और देश के विरुद्ध करेगा तो बहुत विनाशकारी सिद्ध होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किसी भी जानकारी को अपने अनुसार बदलकर किसी के भी विरुद्ध प्रयोग कर सकता है या समाज में गलत संदेश दे सकता है जिससे समाज का माहौल खराब होने का खतरा बढ़ जायेगा। आए दिन आप सुनते हैं कि किसी ने एक संदेश को हेराफेरी करके अफवाह फैला दिया है जिससे समाज का माहौल खराब हो गया है और बाद में इसको रोकने के लिए सरकार इंटरनेट की सेवा बंद कर देती है ताकि ये अफवाह ज्यादा न फैले। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से एक और खतरा है नौकरी जाने का। जैसे-जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग उद्योग, कारखाना, बैंकिंग क्षेत्र, कार्यालय में उपयोग होने लगेंगे वैसे-वैसे नौकरी में कमी आने लगेगी। इसका एक उदाहरण है IBM, जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आने से लगभग 80 हजार लोगों को नौकरी गँवानी पड़ी क्योंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बहुत सारे लोगों का काम अकेले और जल्दी कर सकता है। सरकार को चाहिए कि ऐसे लोगों को पर्याप्त प्रशिक्षण देने के लिये समय के साथ-साथ संसाधन भी उपलब्ध कराए। तकनीकों के इस बदलते दौर में जरूरत इस बात की है कि विशेषज्ञतापूर्ण कार्यों के लिये लोगों को कौशल दिया जाए और इसके लिये संरचना का भी विकास किया जाए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करने में एक दिक्कत यह है कि अगर AI का उपयोग करते समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से कुछ नुकसान या कोई घटना होता है तो इसकी जिम्मेदारी किसकी होगी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बनाने वाले कंपनी की या मालिक पर? इस प्रश्न का जवाब मिलना अभी कठिन है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को बनाने के लिए विश्व स्तर पर एक कानून होना चाहिए कि कहाँ तक इसको बनाया जाए, कैसे उपयोग किया जाए और अगर कुछ हानि होती है तो कौन जिम्मेदार होगा ?

तकनीक निरंतर रूप से आगे बढ़ती जा रही है। वे इस बात को साबित कर रहे हैं कि ये मानव जाति के लिए एक वरदान है। वे किसी भी काम को सरल बनाते हैं और आगे चलकर मानव की तरह एक समस्या को हल करने में मदद भी करते हैं। हर तकनीक का अपना सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों ही होता है और इसी तरह से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भी हैं। विभिन्न उद्योगों और अनुसंधान क्षेत्रों में इसका काफी महत्व होता है लेकिन गलत तरीके से इस्तेमाल किए जाने पर यही कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभिशाप भी साबित हो सकती है और मानव जाति के लिए खतरा बन सकती है।

इनफिरियरिटी कॉम्प्लेक्स का शिकार



सुश्री प्रेरणा किशोर

पिता- श्री जय किशोर, स.लेप.अ.

प्राची पाँच साल की थी। एल.के.जी. खत्म होते ही उसके पापा ने उसका दाखिला प्रथम कक्षा में करा दिया। उसे पढ़ाई करने में कोई रुचि नहीं थी। वह अक्सर अपनी मम्मी से कहती थी, "मम्मी, तुम जानती हो, कोई बच्चे मन से नहीं पढ़ते, वे जबरदस्ती पढ़ते हैं। उसकी मम्मी उससे कहती थी, "बस तू ही है जिसे पढ़ने का मन नहीं करता। देख तो सलोनी को, कितनी तेज है पढ़ने में। तान्या को देख, तेरे ही उमर की है लेकिन उसकी मम्मी उसे तीसरी कक्षा की किताबें भी पढ़ाती है।" लेकिन प्राची का मन कभी नहीं मानता कि वे लोग शौक से पढ़ते हैं। प्राची को लगता था भला इतनी मुश्किल चीजें जैसे कि-अंग्रेजी के नए-नए शब्दों के अर्थ याद रखना, पहाड़े रटना, नये-नये शब्दों की वर्तनी याद करने में भला किसी को अच्छा कैसे लग सकता है।

उसके पापा हर दिन शाम को ऑफिस से लौटकर उसे पढ़ाने बैठ जाते। पहाड़ा गलत होने पर पिटाई करते। कभी ऑफिस जाने से पहले नए शब्दों के अर्थ की एक सूची थमा जाते और वापस आने तक याद हो जाना चाहिए, ऐसा कह जाते। इसलिए प्राची को उसके पापा का घर पर होना बिल्कुल पसंद नहीं था। छुट्टियों के दिन तो उसे बिल्कुल पसंद नहीं थे। उसके पास पापा के साथ कम से कम समय बिताने का एक ही तरीका था कि हर दिन स्कूल जाओ। शनिवार का दिन प्राची को पसंद नहीं था क्योंकि स्कूल से घर लौटते ही पापा के दर्शन होते थे। रविवार तो उसे दुश्वार लगता था। अन्य बच्चे कहीं-कहीं घूमने भी जाया करते थे लेकिन प्राची को सिर्फ पढ़ना होता था। यहाँ तक कि गणेश पूजा और सरस्वती पूजा पर भी उसके पापा उसे पढ़ने बिठा देते, कहते कि भगवान का सब पढ़ा हुआ है। तुझे पढ़ना है। इसी की वजह से प्राची बहुत खुश होती थी जब उसके पापा को कुछ दिनों के लिए ड्यूटी पर कहीं बाहर जाना पड़े, तब खुशी से वह झूम उठती थी। उसे कई बार बुरा भी लगता था यह सोचकर कि ऐसे पापा के न होने पर खुश होना गलत है। वह सोचती थी कि जिनके पापा नहीं होते उनकी जिंदगी कितनी मुश्किल भरी होती है। लेकिन वह करे भी तो क्या? कितने यत्न करके भी इतनी सारी चीजें वह याद नहीं कर पाती थी, समझ नहीं पाती थी। इसपर पापा नाराज हो कर पिटाई करते थे। कभी-कभी मम्मी से भी धुलाई हो जाती थी।

प्राची का मन चित्र बनाने में बहुत लगता था। किताबों में से बाघ, कछुआ, ऊँट इत्यादि देख-देख कर हूबहू उतार देती थी। उसने कभी सीखा नहीं था लेकिन उसे पसंद था तो आप ही बन जाते थे। उसकी उम्र

के बच्चे ड्रॉइंग क्लास जा कर भी उसकी तुलना नहीं कर पाते थे लेकिन पढ़ाई में अच्छी न होने के कारण कक्षा में भी उसका कोई मित्र नहीं था।

एक बार प्रश्न पत्र में आया, अपने पाँच मित्रों के नाम लिखो। प्राची को नहीं पता था कि वह किसी का भी नाम लिख दे या कोई मनगढ़ंत नाम भी लिख देती तो कोई खास फर्क नहीं पड़ता। आखिर बच्चों में कितनी मासूमियत और ईमानदारी होती है, मित्र का नाम पूछा गया था तो भला वह किसी का भी नाम उनकी बिना अनुमति के कैसे लिख देती? पूरी कक्षा में वह सबसे पूछती रही, तुम मेरी दोस्त बनोगी? मैं तुम्हारा नाम लिख दूँ? तुम मेरे दोस्त बनोगे? तुम्हारा नाम लिखूँ क्या मैं?... पर कोई उसका मित्र बनने को तैयार नहीं था। इसका एक और कारण था, उसका गोरा न होना, ऊपर से उसकी मम्मी उसे मोटे-मोटे काजल लगाकर भेज देती थी स्कूल। गर्मी के कारण काजल फैलकर उसका रंग और पक्का दिखने लगता। उसकी कक्षा के लड़के उसका खूब मजाक उड़ाते। लड़कियाँ बस में उसे काली कौआ कहकर चिढ़ाते। इन घटनाओं के कारण उसका आत्मविश्वास पैदा होने से पहले दफन हो चुका था। वह इनफिरियरिटी कॉम्प्लेक्स का शिकार होती जा रही थी।

इसी प्रकार समय बीतता गया। किसी ने उसकी मनोस्थिति पर ध्यान नहीं दिया। शिक्षक भी कक्षा में उस पर ध्यान नहीं देते, बस गलती करने पर डाँटते थे। उसके मन में कहीं न कहीं यह ग्रन्थि बन गई थी कि वह काली है, बदसूरत है, इसलिए न कोई उसका दोस्त है और न कोई शिक्षक उसे पसंद करते हैं। घर की बात तो और थी, पढ़ाई ढंग से न कर पाने के कारण आए दिन पिटती थी।

इस तरह वह 5वीं कक्षा में पहुँच गई। कक्षा में एक नयी, सबसे लंबी, गोरी और खूबसूरत लड़की श्वेता का दाखिला हुआ था। हर कोई उससे आकर्षित था। बच्चे भी और शिक्षक भी। वह पढ़ाई में औसत थी लेकिन गाना और नाचना उसे बहुत अच्छे से आता था। पुरुष शिक्षक खास कर उसपर मुग्ध रहते थे।

एक बार अंग्रेजी की कक्षा चल रही थी। भट्टाचार्य सर कक्षा ले रहे थे “डिग्रिज ऑफ कंपेरिजन” विषय था। उन्होंने उदाहरण दिया 'श्वेता इज मोर ब्यूटीफुल दैन प्राची', सब हंसने लगे। श्वेता शरमाई और प्राची रुआंसी हो गयी।

कुछ दिनों बाद ही गर्मियों की छुट्टी हुई और प्राची अपने ननिहाल गई। उसकी नानी उसे हर बार नए कपड़े दिलवाती थी। इस बार भी उसकी नानी और मौसी उसे कपड़ों की दुकान में लेकर गईं और कहा पसंद करने को तो उसने बैंगनी रंग की एक फ्रॉक पसंद की। उसकी मौसी ने कहा, "प्राची तुम यह सारे रंग क्यों चुनती हो जो तुमपर खिलेगा ही नहीं! कोई एकदम मिल्की व्हाइट होगी तो उस पर खिलेगा यह रंग।" प्राची फिर से रुआंसी हो गयी। उसे एक के बाद एक सारी घटना स्मरण हो आयी। दुकान से घर पास ही था। वह अकेले दौड़कर घर वापस आ गयी। उसने टीवी सीरियल में देखा था पंखे पर लटक कर फाँसी लगाते हुए खुद को। उसकी हाथ पंखे तक नहीं जा सकी, उसने दुपट्टे को खिड़की में बांधा और लटक गयी। नानी और मौसी घर लौटे तो उसे दुपट्टे से लटका हुआ पाया, उनकी हालत ऐसी थी मानो उन्हें काटो तो खून नहीं। जल्दी-जल्दी उन्होंने प्राची को फंदे से उतारा, वह बेहोश हो गयी थी। उसे जब होश आया तो उसने अपने गले पर गहरे फंदे का निशान पाया। उसे अपनी साँस के लिए वो छटपटाहट याद आयी और वह सिहर उठी। इतनी सी उम्र में उसने मौत को इतने करीब से देखा लिया...

पतझड़



श्री चंदन कुमार

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

हर मनुष्य की जिंदगी में कभी ना कभी ऐसा वक्त आता जब उसे ऐसा लगता है कि इसके आगे क्या? मैं कहाँ फंस गया, उसे कुछ समझ नहीं आता कि क्या करूँ? कैसे इस समस्या से बाहर निकलूँ? जिंदगी बिल्कुल बेकार और नीरस सी लगने लगती है, ऐसा लगता है कि सब खत्म हो गया अब। इसी समय उन परिस्थितियों का सामना कर कुछ लोग इन परिस्थितियों से लड़कर और मजबूत होकर सामने आते हैं तो कुछ लोग उन परिस्थितियों से हार मानकर टूट जाते हैं और बिखर जाते हैं।

मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि हमें एक वृक्ष की तरह सोचना चाहिए, जिसके सारे पत्ते पतझड़ में झर जाते हैं पर वो वृक्ष कभी हार नहीं मानता और मौसम बदलते ही नये पत्तों के साथ खिलखिला उठता है। वैसे ही हम मनुष्यों को भी वक्त बदलने का इंतजार करना चाहिए। चाहे कठिनाई कितनी भी जटिल हो, सही वक्त आने का इंतजार करना चाहिए और उसका जमकर मुकाबला करना चाहिए क्योंकि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। अगर कोई बच्चा क्लास में फेल हो जाता है तो हमें उसका हौसला बढ़ाना चाहिए ताकि वो पहले से ज्यादा मेहनत करे और आगे बढ़े।



हम सभी ने अपने जीवन में बहुत सारे ऐसे लोगों को देखा है जो गाँवों में रहते हैं, पढ़ने का कोई साधन नहीं होता पर वो संघ लोक सेवा आयोग जैसी कठिन परीक्षा को भी आसानी से पास कर जाते हैं। अगर उन्होंने गरीबी से समझौता कर लिया होता तो शायद वो कभी ऊपर नहीं उठ पाते। और वैसे लोग जिन्होंने गरीबी को अपनी किस्मत समझ लिया वो हमेशा के लिए गरीब ही रह जाते हैं। इसलिए हम मनुष्यों को हमेशा वृक्ष की तरह सोचना चाहिए क्योंकि पतझड़ के बाद ही फूल खिलते हैं।

बोर्डिंग स्टेशन



श्रीमती रोमा कुमारी

पति- श्री सूरज कुमार, क. अनुवादक

साहिल के कुल पाँच दोस्त थे, सभी एक साथ एक ही कॉलेज में पढ़ते थे परंतु उन सभी के घर अलग-अलग शहरों में थे। साहिल ने गर्मी की छुट्टियों में दिल्ली घूमने का प्रस्ताव अपने दोस्तों के सामने रखा। किशन को छोड़कर बाकी सभी राजी हो गए क्योंकि किशन के घर की स्थिति अच्छी नहीं थी। किशन ने बाकी दोस्तों से कहा, “तुम चारों घूमने चले जाओ, मैं नहीं जाऊँगा।” इस पर साहिल ने कहा कि अगर जाएँगे तो सभी जाएँगे नहीं तो कोई नहीं जाएगा। उन्हीं दोस्तों में से अनुज ने सुझाव दिया कि किशन अगर पैसे के कारण नहीं जा रहा है तो ऐसा करते हैं कि हम चारों मित्र मिलकर उसके इस यात्रा का खर्च वहन कर देते हैं। इस प्रस्ताव पर बाकी चारों दोस्तों ने सहमति जताई। अब बात आई कि दिल्ली कैसे जाएँगे? उन सभी का बजट पहले से ही कम था अतः हवाई यात्रा वे लोग कर नहीं सकते थे इसलिए उन्होंने दिल्ली जाने के लिए रेल यात्रा को चुना। दिल्ली जाने के लिए भुवनेश्वर से एक ट्रेन है जिसका नाम है नीलांचल एक्सप्रेस। यह ट्रेन आनंद विहार को जाती है। आनंद विहार नई दिल्ली के पास का ही स्टेशन है। नीलांचल एक्सप्रेस भुवनेश्वर से दिन के 12:20 बजे खुलती है और यह रात 21:15 बजे आनंद विहार पहुँचती है। इस टूर के लिए प्रोग्राम तथा टिकट बनाने का दायित्व साहिल को दिया गया। साहिल ने सबसे पहले आईआरसीटीसी के वेबसाइट पर जाकर तय तिथि के लिए टिकट चेक किया। उसने पाया कि उस तिथि को किसी भी ट्रेन में सीट खाली नहीं थी। सभी ट्रेनों में वेटिंग लिस्ट थी। गर्मी की छुट्टी के कारण सभी ट्रेनों की कमोबेश यही स्थिति थी। अंततः उसने नीलांचल एक्सप्रेस में टिकट ले लिया, टिकट लेने के दौरान उसका वेटिंग क्रम 10 था। अब प्रतिदिन साहिल टिकट की वेटिंग लिस्ट को चेक करता था। यात्रा के 5 दिन पहले जब उसने चेक किया तो वेटिंग लिस्ट 4 आया। सभी लोग इसी आशा में थे कि टिकट कंफर्म हो जाएगी। यात्रा के 1 दिन पहले सारी टिकट



कंफर्म हो गयी परंतु सीट नंबर नहीं मिला था। इस विषय में अनुज ने बताया कि चार्ट बनने के बाद सभी का सीट नंबर अलॉट हो जाएगा। आखिरकार यात्रा का दिन भी आ गया। ट्रेन के प्रस्थान से 4 घंटे पहले चार्ट बन गया। चार्ट बनने के बाद उन सभी को सीट एवं कोच संख्या अलॉट हो गया। सीट तो कंफर्म हो गयी परंतु एक विडंबना हो गई, उनमें से तीन दोस्तों की सीट एक जगह एक ही कोच में कंफर्म हुई और बाकी दो दोस्तों की सीट दो अलग-अलग डिब्बे में कंफर्म हुई। इस कारण सफर का सारा मजा किरकिरा हो गया क्योंकि सभी दोस्त एक साथ यात्रा करना चाहते थे। उनमें से एक दोस्त ने कहा कि कोई बात नहीं, हमलोग ट्रेन में सीट एक्सचेंज कर लेंगे।

फिर वे लोग निश्चित दिन को नियत समय पर स्टेशन पहुंच गए। ट्रेन आने के बाद वे सभी लोग एक ही डिब्बे में सवार हो गए जहाँ 3 सीटें कनफर्म हुई थीं। उन 3 सीटों में 1 साइड लोअर, 1 साइड अपर और एक लोअर था। उन लोगों ने अपने आसपास के सहयात्रियों से सीट बदलने के लिए अनुरोध किया परंतु कोई भी यात्री सीट बदलने के लिए तैयार नहीं हुआ। मजबूरन सभी पाँच दोस्त एक ही जगह एडजस्ट करके बैठ गए। किशन ने कहा कि वह रात में दूसरे डिब्बे में सोने के लिए चला जाएगा, फिलहाल वह सभी लोगों के साथ यहीं बैठेगा और यात्रा का आनंद लेगा। तीन दोस्त साइड लोअर सीट पर बैठ गए और दो दोस्त लोअर बर्थ



पर बैठ गए। किशन साइड लोअर सीट पर बैठकर बाहर के नजारे का आनंद लेने लगा। कुछ समय बीतने के बाद शाम के नाश्ते का समय हो गया। एक मित्र अपने घर से चूड़ा फ्राई करके लाया था और दूसरा मित्र घुघनी। उन लोगों ने घुघनी और चूड़ा फ्राई मिलाकर शाम के नाश्ते का आनंद लिया। फिर वे लोग अंताक्षरी खेलने लगे। अंताक्षरी खेलते-खेलते कब रात हो गई पता ही नहीं चला। फिर उन लोगों ने रात का खाना खाया। रात के भोजन के पश्चात किशन और अनुज अपने दूसरे डिब्बे के सीट पर सोने चले गए।

किशन और अनुज जब अपने कोच की सीट पर आते हैं तो वे लोग पाते हैं कि वहाँ पहले से कोई और व्यक्ति सोया हुआ है यह देखकर उन दोनों का सिर चकरा जाता है। वे लोग सोचने लगते हैं कि यह तो हमारी सीट है फिर ये लोग कैसे सोए हुए हैं... इसी बीच अनुज उन दोनों यात्रियों को उठाता है और बोलता है कि यह तो हमारी सीट है, आप लोग उठ जाएँ और हमें सोने दें। इसपर वे दोनों यात्री जो बर्थ पर पहले से सोए हुए थे उन्होंने कहा कि यह सीट मुझे टीटी ने अलॉट किया है मेरा आरएसी में टिकट था, अब मेरा टिकट कंफर्म हो गया है आप जाकर टीटी से बात कीजिए। यह सुन अनुज को गुस्सा आ गया। उसने सोचा कि यह जरूर टीटी की मिलीभगत है। वह पैसे लेकर सीट बेच रहा है और हमारी सीट इन लोगों को दे दी है। अनुज ने उसी वक्त ऑनलाइन शिकायत कर दी कि टीटी के द्वारा हमारी सीट किसी दूसरे व्यक्ति को दे दी गयी है। शिकायत दर्ज होने के 15 मिनट पश्चात टीटी और दूसरे रेलकर्मी उसे सीट पर पहुँचते हैं। टीटी के आने के बाद अनुज उनसे कहता है कि आपने हमारी सीट इन लोगों को कैसे दे दी? इस पर टीटी अनुज से कहता है कि आपकी बुकिंग किस स्टेशन से थी? आपका बोर्डिंग स्टेशन क्या था? इस प्रश्न के जवाब में अनुज कहता है कि हमारी बुकिंग भुवनेश्वर से थी। तो टीटी ने अनुज से पूछा कि भुवनेश्वर से अभी रात तक क्या आप अपने सीट पर उपस्थित थे? अनुज ने उत्तर दिया, “नहीं, मैं अपने मित्र के साथ दूसरे कोच में बैठकर यात्रा कर रहा था हमलोगों ने सोचा कि खाना-पीना खाकर रात में एक ही बार अपनी सीट पर चले जायेंगे।” इस पर टीटी ने कहा, मैंने भुवनेश्वर से ट्रेन खुलने के चार स्टेशन बाद तक आप दोनों का इंतजार किया, जब आपलोग अपने सीट पर नहीं पहुँचे तो हमने आपदोनों को अनुपस्थित (नो शो) कर दिया और आपकी सीट किसी दूसरे यात्री को अलॉट कर दी, यह सारी प्रक्रिया ऑनलाइन होती है। अतः अब मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। आपको अपने बोर्डिंग स्टेशन से अपनी सीट पर बैठना चाहिए। रेलवे के नए नियम के अनुसार यात्रियों को अपने बोर्डिंग स्टेशन पर ही ट्रेन में चढ़ना है और अपनी सीट पर उपस्थित रहना है। टिकट चेकिंग के दौरान अगर यात्री अपनी सीट पर उपस्थित नहीं रहते हैं तो टीटी को यह अधिकार है कि वह उस यात्री को अनुपस्थित कर सकता है और दूसरे वेटिंग लिस्ट यात्रियों को वह सीट अलॉट कर सकता है। यही घटना आपदोनों के साथ हुई है। इस पर अनुज ने कहा कि यात्री को कैसे पता चलेगा कि टिकट चेकिंग करने के लिए टीटी कब आ रहा है? टीटी तो कभी भी आ जाता है, उनका कोई टाइम टेबल नहीं होता है। और कभी कभी एक पीएनआर के कुछ यात्रियों की सीट दूसरे डिब्बे में होती है, तो वैसी परिस्थिति में यात्री को क्या करना पड़ेगा? इस प्रश्न पर टीटी ने सुझाव दिया कि उस यात्री को चाहिए कि जैसे ही वह ट्रेन में चढ़े वह उस कोच के टीटी को ढूँढ़े और टीटी को ढूँढ़ कर वह अपनी हाजिरी बनवाए। हाजिरी बनवाकर ही कहीं और जा सकता है। अगर किसी कारणवश उस यात्री को दूसरे डिब्बे में जाना हो तो जिस जगह उसकी सीट है उसके आसपास के सहयात्रियों को यह बता कर जाए कि वह उपस्थित है और वह दूसरे डिब्बे में जा रहा है, अगर टीटी आये तो उसे सूचित किया जाए कि इस सीट का यात्री उपस्थित है। यह सुन अनुज निरुत्तर हो गया।

अब अनुज मुँह लटकाये साहिल के कोच में आ गया और अपनी आपबीती सुनाई। उस रात सभी दोस्त एक ही कोच में एडजस्ट करके सो गए और सुबह आनंद विहार पहुँच गए।

किसान और न्यूनतम समर्थन मूल्य



श्री सौरभ दास

सहा. पर्यवेक्षक

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ ज्यादातर लोग कृषक हैं। वर्तमान समय में भारत के लगभग 55 प्रतिशत लोग खेती पर आश्रित हैं। किसान को देश का अन्नदाता कहा जाता है जो पूरे देश के लोगों का ख्याल रखता है। भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग तरह की फसलें उपजाई जाती हैं। इसमें सबसे महत्वपूर्ण वहाँ की मिट्टी और पर्यावरण है। किसान यहाँ अपनी मेहनत से भूमि को सींचता है, खेती करता है और अन्न उपजाता है। देश के किसान की बात की जाए तो हम यह कह सकते हैं कि इनके लिए खेती करना और अन्न उपजाना एक व्यवसाय नहीं है बल्कि यह हमारी परंपरा और संस्कृति को दर्शाता है, यह देश की भूमि के प्रति उनके लगाव को दर्शाता है।

भारत में ज्यादातर कृषक पारंपरिक तरीके से ही खेती करते हैं। यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे परंपरागत ज्ञान का हिस्सा है। यह अनुभव और प्रशिक्षण, जैसे कि किस ऋतु में किस तरह के फसल की बुवाई करनी है, कब करनी है, कैसे करनी है, किस तरह से सिंचाई करनी है, कब खाद का प्रयोग करना है, किस तरह के खाद का प्रयोग करना है, कितनी मात्रा में प्रयोग करना है आदि का ज्ञान किसान को अपने पूर्वजों से ही मिला है। भारत विविधताओं से भरा एक देश है, यहाँ किसी जगह धान की



पैदावार होती है तो किसी जगह गेहूँ की, किसी जगह दलहन की खेती है तो किसी जगह तिलहन की, कहीं मसालों की खेती का करिश्मा है तो कहीं गन्ने के खेती की मिठास है, कहीं फलों के बागीचे हैं तो कहीं फूलों की महकती बगिया। ये सब संसाधन देश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जो कि किसानों की मेहनत और लगन का नतीजा है। यही नहीं भारत में नाना प्रकार के फसलों का संग्रह है, यहाँ धान, गेहूँ, दालों इत्यादि के विभिन्न किस्मों की खेती की जाती है। यहाँ किसान अपने-अपने क्षेत्र में अपने-अपने फसलों की पैदावार की समझ रखते हैं और अपनी सूझ-बूझ से खेती करते हैं। हमारे देश में पर्व और त्योहार का पर्यावरण और खेती से अनूठा संबंध रहा है। हमारे कई पर्व फसल की पैदावार के बाद उसके उत्साह में मनाए जाते हैं, जैसे-

मकरसंक्रांति, बिहू, पोंगल, लोहड़ी, इत्यादि।

पर्यावरण के धीरे-धीरे बदलते मिजाज ने किसानों के लिए चुनौती और विपरीत प्रभाव डालने का काम किया है। हमारे देश के ज्यादातर किसान खेती के लिए मौसम पर आश्रित रहते हैं और जब मौसम अपनी प्रकृति में बदलाव लाती है तो यह हमारे किसानों के लिए एक बड़ी समस्या साबित हो जाती है। अगर बारिश के मौसम में खेतों में पानी न आए तो धान की फसल सूख जाती है, वहीं ज्यादा बारिश होने पर फसलें डूब जाती हैं। प्रकृति के कहर जैसे-बाढ़, सूखा, शीत-लहर इत्यादि जब अपना विकराल रूप ले लेते हैं तो यह किसानों के लिए भयावह आपदा साबित हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप देश में हाहाकार मच जाता है। इसके अलावा और भी कई आपदाएँ और समस्याएँ हैं, जो किसान के सामने रोड़ा बनकर खड़ी हैं। हमारी बढ़ती जनसंख्या दबाव से हमारे देश के सीमित संसाधनों पर असर पड़ता है। सीमित संसाधनों में ही हमारे जरूरतों को पूरा करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। आज अधिक जनसंख्या घनत्व की वजह से भूमि धारण न्यूनतम होता जा रहा है, छोटे-छोटे जमीन पर अलग-अलग किसान खेती कर रहे हैं। ऐसे छोटे स्तर पर खेती करने से फसलों की पैदावार पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि खेती में लागत बढ़ जाती है। जब छोटे किसान कम मात्रा में बीज, उर्वरक आदि का प्रयोग करते हैं तो लागत मूल्य ज्यादा हो जाती है। वहीं जब बड़े स्तर पर खेती की जाती है तो लागत मूल्य भी कम हो जाता और उत्पादन भी बेहतर होता है। बड़े स्तर पर खेती करने से हम नई-नई तकनीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं, जिससे बुवाई, सिंचाई, कटाई इत्यादि में लाभ होता है। आज किसान ऐसी ही कई समस्याओं से जूझ रहा है। बारिश में अनियमितता, पर्यावरण का कहर, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट, नई तकनीकों का अभाव, महंगाई और लागत मूल्य में वृद्धि, ये सब किसानों की बेबसी का कारण बन रहे हैं।

ऐसी स्थिति में किसान को सरकार से उम्मीद रहती है कि वो उनकी राहत के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये। सरकार द्वारा बहुत सारी योजनाएँ किसान के हित के लिए कार्यान्वित की गई हैं जिससे उनको कुछ राहत मिल पाए। सरकार अपने स्तर से कई तरह के अनुदान प्रदान करती है, जैसे- बीज और खाद के मूल्य में राहत देना, आपदा के समय खेती के लिए गए कर्ज में माफी देना, किसानों के कर्ज पर ब्याज में छूट देना और ऐसे ही अन्य कई तरह के अनुदान सरकार की राहत योजनाओं में शामिल है। न्यूनतम समर्थन मूल्य भी ऐसे ही राहत कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कदम है, जो सरकार की प्राथमिकता में शामिल है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य वह दर है जो सरकार किसानों से फसल खरीदने के लिए तय करती है और वह किसानों की उत्पादन लागत के कम से कम डेढ़ गुना अधिक रहता है। सरकार किसी भी फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य को लाभकारी मानती है और इसके माध्यम से किसानों का समर्थन करती है। फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार कई फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करती है, जिससे किसान उस फसल की ज्यादा पैदावार करें। इसके अलावा सरकार समय-समय पर न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि करती रहती है जिससे महंगाई में किसानों को राहत मिलती रहे। परन्तु यह वृद्धि कई बार कृषि लागत को ध्यान में रखते हुए मामूली प्रतीत होती है। डीजल की आसमान छूती कीमत कृषि के लागत मूल्य

में वृद्धि का कारक है क्योंकि इसका इस्तेमाल ट्रैक्टर, सिंचाई पंप और हार्वेस्टिंग मशीनों में भारी मात्रा में होता है। मुद्रास्फीति के कारण न्यूनतम समर्थन मूल्य देने के बावजूद भी फसलों पर उसकी कीमतों का प्रभाव पूर्ववत् ही रह जाता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य के तहत कुछ ही फसल आते हैं जिससे किसान बाकी दूसरे फसलों की खेती करने में हतोत्साहित और असमर्थ रहते हैं।

इसके अलावा किसानों की उपज की सुनिश्चित खरीद भी एक बड़ी समस्या है। जो राज्य सरकारें किसानों के संपूर्ण अनाज को खरीद लेती है वहाँ किसानों को तो लाभ मिल जाता है लेकिन कम खरीद करने वाले राज्यों के किसान पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सरकार तो फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित देती है परन्तु इसी मूल्य पर बाज़ार के थोक विक्रेताओं द्वारा फसलों की खरीद की निगरानी सुनिश्चित करना एक चुनौती है। बाज़ार में बिचौलियों, कमीशन एजेंटों, दलालों की पैठ को ध्वस्त करना और हक़दार को उचित राशि प्राप्त हो यह सुनिश्चित करना अपने आप में ही एक समस्या है। ज्यादातर न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ बड़े एवं सम्पन्न किसानों को ही मिल पाता है क्योंकि छोटे एवं मध्यमवर्गीय किसानों की उपज या तो उनके खुद के खाने तक होती है और यदि कुछ ज्यादा भी हो जाए तो उसको उचित मूल्य पर बाज़ार में बेचना एक आफत ही है। इससे छोटे किसानों तक इसका लाभ पहुँचाना मुश्किल हो जाता है। रख-रखाव के अभाव में अपनी मेहनत से उपजाए हुए फसलों के बेचने के लिए इन सभी आफतों का सामना करना किसानों को हतोत्साहित करता है। ऐसी स्थिति में न्यूनतम समर्थन मूल्य बस हाथी के दाँत है यानि न्यूनतम समर्थन मूल्य नाम मात्र कहने के लिए ही सुंदर प्रतीत होता है और वास्तविकता से कोसों दूर रहता है।

किसान के लिए धरती माँ के समान होती है। हर किसान धरती की पूजा करते हैं, जो हमें अन्न प्रदान करती है। यदि किसान अनाज ना उपजाए तो देश में भुखमरी छा जाएगी। ऐसी स्थिति में किसान यदि संकट में है तो इनके प्रति हमारी प्राथमिकता सुनिश्चित करना हमारा दायित्व है। हमें इसके मूल कारणों को ढूँढना होगा ताकि इस समस्या का दीर्घकालिक समाधान निकल सके। परंपरागत खेती में आज के समय के हिसाब से बदलाव करके इसमें कुछ नई तकनीकों को शामिल करना होगा। मिट्टी की उर्वरता की उचित जाँच होनी चाहिए जिससे उसे ठीक करने में सहायता मिलेगी और किसानों को कम लागत में अच्छी फसल प्राप्त होगी। खेती में जैविक अनुसन्धान की ओर बढ़ना होगा जिससे खेती पर्यावरण अनुकूल हो सके और प्रकृति का संतुलन बना रहे। अनाज का संग्रहण एक बड़ी समस्या है, जो सरकार को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अधिकतम खरीद करने से रोकती है। इसमें सुधार करके हम छोटे किसानों तक इसका लाभ पहुँचा सकते हैं। बाज़ार में दलालों एवं एजेंटों के ऊपर लगाम लगानी पड़ेगी जिससे किसानों को फसल बेचने में कठिनाइयों का सामना न करना पड़े। न्यूनतम समर्थन मूल्य का आकलन उचित लागत, महंगाई, मुद्रास्फीति एवं अन्य कई कारकों का अध्ययन करके निर्धारित करना चाहिए जिससे इसके निहित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके और किसानों के जीवन को खुशहाल बनाया जा सके। देश की आत्मा यहाँ के गाँवों में बसती है, किसान की खुशहाली देश की सम्पन्नता का सूचक है।

मूव एनीटाईम

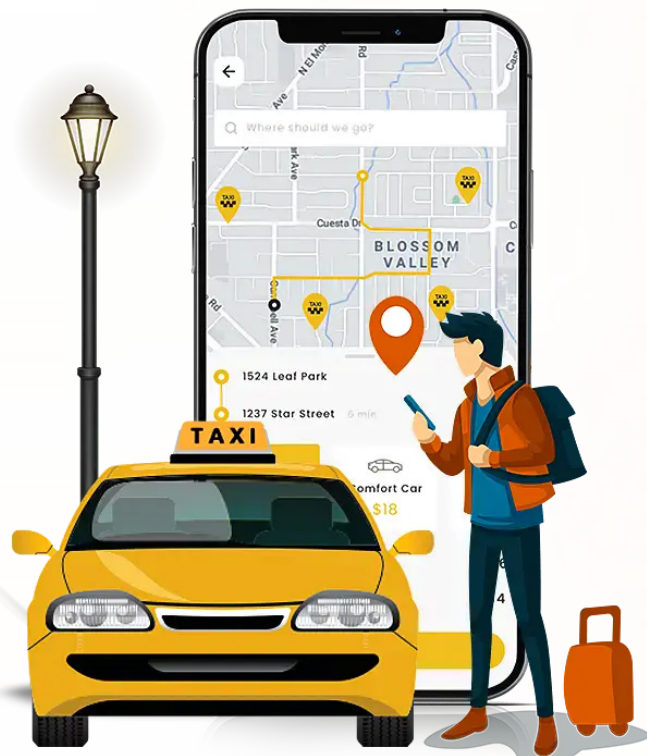


श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

"आज तुमलोग ट्रेन पकड़ने वाले थे न...ट्रेन कितने बजे की है...ट्रेन छूटने के 2 घंटे पहले घर से खाना हो जाना...", समीर के पापा ने समीर से कहा। "ओह हो.. पापा.. आप भी न...वही पुरानी घिसी-पिटी सोच...अब जमाना 'मूव एनीटाईम' का आ गया है। अब मोबाइल से कभी भी टैक्सी बुक करो और तुरंत स्टेशन पहुँच जाओ," समीर ने अपने पापा को समझाते हुए कहा। "ठीक है बेटा....जैसी तुम्हारी मर्जी," यह कहकर पिताजी चुप हो गए। घड़ी की सुइयाँ अपनी गति से बढ़ती जा रही थीं। आज समीर ने अपने पिता की हिदायत न मानकर जानबूझकर देरी से ऑनलाइन टैक्सी ऐप के जरिये टैक्सी बुक की ताकि वह अपने पिता को सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग दिखा सके। राइड बुक करने के बाद वह मन ही मन बहुत खुश हो रहा था। मोबाइल ऐप में टैक्सी का नंबर, टैक्सी ड्राइवर का नाम, उसका लोकेशन और एस्टिमेटेड टाईम भी दिख रहा था इसलिए समीर निश्चित था कि टैक्सी पाँच मिनट में आ जाएगी। पर यह क्या...7 मिनट हो गए किंतु टैक्सी अपनी लोकेशन से जरा भी टस से मस न हुई। उसने सोचा, "इंटरनेट में थोड़ी प्रॉब्लम होगी इसलिए थोड़ी देर और इंतजार कर लेता हूँ।"

जब 10 मिनट बीत जाने के बाद भी टैक्सी नहीं आई तो उसने फोन लगाने की सोची। उसने ड्राइवर को फोन लगाया और बोला, " मैं अपने लोकेशन पर आपका इंतजार कर रहा हूँ, मुझे रेलवे स्टेशन जाना है।" उधर से ड्राइवर की आवाज आई, "जाऊंगा सर! पर यह बताइए कि ऐप में पैसे कितने दिखा रहे हैं?"

"जी, 220 रुपये," समीर ने जवाब दिया। ड्राइवर ने फिर सवाल किया, "आप पैसे ऑन-



लाइन देंगे या कैश?" समीर ने जवाब दिया, "मैंने तो ऑनलाइन सेलेक्ट किया है।" तो उधर से आवाज आई, "तब मैं नहीं जाऊंगा, आप राइड कैंसिल कर दीजिए।"

समीर ने खीझकर कहा, " मैं राइड क्यों कैंसिल करूँ, आपने ऑनलाइन पैसे लेने से मना किया है, आप कैंसिल कीजिए।" उधर से कोई जवाब न आया और फोन काट दिया गया। समीर को जाने की हड़बड़ी थी इसलिए समय की नजाकत को समझते हुए उसने राइड कैंसिल कर दी, राइड कैंसिल करते ही उसके खाते से 30 रुपये कट गए।

कहावत है कि दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है, इसलिए समीर ने इस बार पेमेंट विकल्प में कैश चुनकर फिर से ऑनलाइन टैक्सी सर्च करके बुक की पर अबकी बार भी ड्राइवर का लोकेशन बदल ही नहीं रहा था। स्टेशन से रेलगाड़ी छूटने का समय नजदीक आता जा रहा था। समीर की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। इसलिए समीर ने बिना समय गँवाए ड्राइवर को फोन लगाया और पूछा, " मैंने राइड बुक की है, कहाँ हैं आप?" इस पर ड्राइवर ने उत्तर दिया, "मैं तो मेन रोड पर हूँ, आपको कहाँ जाना है?"

"मुझे रेलवे स्टेशन जाना है क्या आप रेलवे स्टेशन जाएँगे?" समीर ने कहा। इस पर ड्राइवर ने बोला, "देखिये सर, पेट्रोल के दाम बढ़ गए हैं और मुझे रेलवे स्टेशन पर पार्किंग चार्ज भी देना पड़ता है इसलिए ऐप में जो किराया दिखा रहा है उससे 70 रुपया ज्यादा लगेगा।"

"अरे इतना ज्यादा!" समीर को यह सुनकर झटका लगा फिर भी उसने सहानुभूति दिखाकर बोला, "ठीक है 30 रुपये ज्यादा ले लेना, अब चलो देरी हो रही है" पर ड्राइवर ने इतने भाड़े में जाने से मना कर दिया और राइड कैंसिल कर दी। इतने में समीर ने देखा कि उसके एकाउंट से 15 रुपए कैंसिलेशन चार्ज के नाम पर काट लिए गए। वह मन ही मन सोच रहा था कि मैंने तो राइड कैंसिल नहीं की थी फिर भी मेरे पैसे क्यों काट लिए गए, इसमें तो मेरी गलती नहीं थी पर इन सब पर ज्यादा विचार करने का समय कहाँ था। ट्रेन का समय हो रहा था। वह मन मसोस कर रह गया।

फिर उसने हिम्मत कर तीसरी बार राइड बुक करने की कोशिश की। इस बार ऐप में उतना ही भाड़ा दिख रहा था जितना थोड़ी देर पहले पिछले ड्राइवर ने मांगा था। जैसे-जैसे समय बढ़ रहा था वैसे-वैसे भाड़े में बढ़ोत्तरी हो रही थी। उसे पिछले वाले राइड के कैंसिल होने पर अफसोस हो रहा था। फिर भी उसने बढ़े हुए भाड़े पर राइड बुक की। इस बार समीर यह देखकर हैरान हो गया कि तुरंत ही एक कैब उसके घर के आगे रुकी और उसके ड्राइवर ने खिड़की से सिर बाहर निकालकर पूछा,



"क्या आपका नाम समीर है, क्या आपने ऑनलाइन कैब बुक किया है।" यह सुनकर समीर की बाँछे खिल गईं, उसने बोला "जी! मेरा नाम समीर है, मैंने ही कैब बुक किया था।" ड्राइवर ने डिक्की खोलते हुए कहा, "ठीक है जल्दी आइये और अपना सामान डिक्की में रखकर बैठ जाइए।" जब समीर डिक्की में सामान रखने गया तो उसने पाया कि डिक्की में जगह कम थी, उसमें 2 सूटकेस और 2 बैग नहीं आ पा रहे थे। यह देखकर ड्राइवर ने सुझाव दिया, "सर! आपके पास सामान ज्यादा है, आपने छोटी कैब बुक कर ली है, आपको बड़ी गाड़ी बुक करनी होगी। आप ऐप में इस राइड को कैंसिल कर बड़ी कैब बुक करने के लिए विकल्प का चयन कीजिए।" अब यह सुनकर समीर अवाक रह गया।

समीर के पास दूसरा विकल्प नहीं था, चौथी बार उसने पुनः ऑनलाइन कैब बुक किया। इस बार उसने बड़ी गाड़ी का विकल्प चयन कर कैब बुक किया। भाड़ा पहले वाले विकल्प से ज्यादा था। जाहिर सी बात है, जब गाड़ी बड़ी होगी तो भाड़ा भी ज्यादा लगेगा। थोड़ी देर में एक बड़ी गाड़ी समीर के दरवाजे पर आ कर रुकी। समीर जल्दी से गाड़ी में सामान रखने लगा। इसी बीच ड्राइवर ने पूछा, "आप कितने लोग हैं?" "हमलोग चार लोग हैं", समीर ने उत्तर दिया। इस पर ड्राइवर ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा, "देखिए सर, अभी कोविड प्रोटोकॉल के हिसाब से सिर्फ तीन ही लोगों की अनुमति है, मैं सिर्फ तीन ही लोग को अपनी गाड़ी में ले के जा सकता हूँ। अगर मैंने ज्यादा लोगों को गाड़ी में बिठाया तो पुलिस चालान काटेगी।" समीर रूआंसा होते हुए बोला, "ऐसे कैसे होगा, हम सभी को एक साथ रेलवे स्टेशन जाना है।" इस पर ड्राइवर ने कहा, "जब आप इतना रिक्वेस्ट कर रहे हैं तो मैं रिस्क ले सकता हूँ पर इसके लिए आपको ₹100 रुपये एक्सट्रा देना होगा।" मरता क्या न करता! समीर तय किए गए अधिक भाड़े को अदा करने को राजी हो गया। सब लोग अपनी सीट पर बैठ चुके थे। फिर ड्राइवर की आवाज सुनाई दी, "सर ओटीपी बताइये।" "जी 6783," समीर ने अपने मोबाईल में देखते हुए ओटीपी बताया। फिर गाड़ी स्टेशन की ओर चल दी।

गाड़ी बहुत ही धीमी गति से चल रही थी पर समीर के दिल की धड़कन तेज चल रही थी। वह ड्राइवर पर झल्लाया कि वो तेजी से गाड़ी चलाए नहीं तो ट्रेन छूट जाएगी। ये बात सुनकर ड्राइवर ने गाड़ी की गति बढ़ा दी। स्पीड के चक्कर में कई बार दुर्घटना होते-होते बची। स्टेशन पर पहुँचते ही समीर ने कैब से उतरते हुए जल्दी से ड्राइवर को किराया दिया और ट्रेन पकड़ने प्लेटफार्म की ओर भागने लगा। स्टेशन पर लगे डिसप्ले बोर्ड पर उसने पाया कि उसकी ट्रेन 3 नंबर प्लेटफार्म से छूटने वाली है। तीन नंबर प्लेटफार्म पर जाने के लिए वह जल्दी से सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। तभी सिग्नल हरा हो गया और ट्रेन ने खुलने की सीटी दे दी। अब समीर ने अपनी गति बढ़ा दी पर सीढ़ियों के ऊपर से ही उसने देखा कि ट्रेन खुल चुकी है। यह देखकर समीर अपनी पूरी ताकत लगा कर दौड़ने लगा पर यह क्या... ! समीर के प्लेटफार्म नंबर 3 पर पहुँचते-पहुँचते रेलगाड़ी ने अपनी रफ़्तार पकड़ ली। हाँफते हुए समीर जाती हुई ट्रेन को एक हारे हुए खिलाड़ी की तरह निहार रहा था। 'मूव एनीटाईम' के चक्कर में उसे पैसे और ट्रेन दोनों से हाथ धोना पड़ा।

सेल का खेल



सुश्री ऐश्वर्या परिडा

पिता - श्री निरंजन परिडा, स.लेप.अ.

अब तो सालों भर " सेल" लगता है,
 डिस्काउंट तो बच्चों का खेल लगता है।
 ऑफर की बाढ़ लगी रहती है,
 हर रोज पेपर में इशितहार रहती है।
 जेब खाली करने का पूरा इंतजाम रहता है,
 विज्ञापन ऐसा मानों, सब मुफ्त मिलता है।
 हर "डे" को "ग्रेट डे" सेल बोला जाता है,
 राष्ट्रीय दिवस तक को न छोड़ा जाता है।
 सेल को त्योहार की तरह प्रचारित किया जाता है,
 मानों शामिल न हुए तो कुछ छूट सा गया लगता है।
 माहौल ऐसा कि जिसने कुछ ना खरीदा,
 वो बेवकूफ बन गया!
 जिंदगी का जैसे कोई
 बेहतरीन मौका चूक गया!
 सेल मैनिया से बाहर निकलिये,
 अपने विवेक का उपयोग कीजिए।

जिंदगी



श्री बिमल टोपनो

व. लेखापरीक्षक, सम्बलपुर

कल दूर से देखा खुशी को
 वो अपनी राह से गुजर रही थी।
 फिर ढूंढा उसे इधर - उधर
 वो आँख मिचौली खेल रही थी।
 एक अरसे बाद वो आई नजर
 वो मुझे देख कर दिलासा दे रही थी।
 मैंने पूछा उससे – क्यों इतना दर्द दिया तूने
 वो हंस के बोली – मै ही तो जिंदगी हूँ
 तुझे जीना सिखा रही थी।



मेरे पापा

श्री सूर्यवंशी मुदुली

पिता- श्री अक्षय कुमार मुदुली

बिना वो उंगलियाँ पकड़े
 कहाँ कुछ हासिल होना है।
 साथ ना हो उनका तो
 जिंदगी में रोना है।
 पापा की जेब में देखा मैंने
 हर कीमती खिलौना है।

बिखरे कभी सपने अगर तो
 पापा एक बिछौना है।
 लौटा सकूँ वो खुशियाँ उन्हें
 मुझे उस काबिल होना है।
 लुट जाए सब कुछ बस
 पापा को नहीं खोना है... ।

वनस्पति और उसके फायदे



श्री राजु कुमार

आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक “बी”

तुलसी:- तुलसी का पौधा झाड़ी के रूप में उगता है। इसकी पत्तियाँ हरी एवं बैंगनी आभा वाली हल्के रोएँ से ढँकी होती हैं। पत्तियाँ सुगंधित होती हैं। पुष्प मंजरी अति कोमल और बहुरंगी छटाओं वाली होती है, जो बैंगनी और गुलाबी आभा के पुष्प चक्रों से लगती हैं। नए पौधे मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में उगते हैं और शीतकाल में फूलते हैं। पौधा सामान्य रूप से दो-तीन वर्षों तक हरा बना रहता है। इसके बाद इसकी वृद्धावस्था आ जाती है। पत्ते कम और छोटे हो जाते हैं और शाखाएँ सूखी दिखाई देती हैं।

तुलसी में अनेक जैव सक्रिय रसायन पाए गए हैं, जिनमें टैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड्स प्रमुख हैं। अभी भी पूरी तरह से इनका विश्लेषण नहीं हो पाया है।

भारतीय संस्कृति में तुलसी को पूजनीय माना जाता है। धार्मिक महत्व का होने के साथ-साथ तुलसी औषधीय गुणों से भी भरपूर है। आयुर्वेद में तो तुलसी को उसके औषधीय गुणों के कारण विशेष महत्व दिया गया है। तुलसी ऐसी औषधि है जो ज्यादातर बीमारियों में काम आती है। इसका उपयोग सर्दी-जुकाम, खाँसी, दंत रोग और श्वास संबंधी रोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद माना जाता है। चूंकि यह वात एवं कफ शामक है इसलिए अनेक आयुर्वेदिक एवं हर्बल कफ सीरप में इसका प्रयोग प्रमुख घटक के रूप में किया जाता है।

गिलोय : एक बहुवर्षीय लता होती है। इसके पत्ते पान के पत्ते की तरह होते हैं। आयुर्वेद में इसको कई नामों से जाना जाता है यथा अमृता, गुडुची, छिन्नरुहा, चक्रांगी आदि। बहुवर्षीय तथा अमृत के समान गुणकारी होने से इसका नाम अमृता है। आयुर्वेद साहित्य में इसे ज्वर की महान औषधि माना गया है एवं जीवन्तिका नाम दिया गया है। गिलोय की लता जंगलों, खेतों की मेड़ों, पहाड़ों की चट्टानों आदि स्थानों पर सामान्यतः कुण्डलाकार चढ़ती पाई जाती है। नीम, आम के वृक्ष के आस-पास भी यह मिलती है। जिस वृक्ष को यह अपना आधार बनाती है, उसके गुण भी इसमें समाहित हो जाते हैं। इस दृष्टि से नीम पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ औषधि मानी जाती है। इसका तना छोटी अंगुली से लेकर अँगूठे जितना मोटा होता है। बहुत पुरानी गिलोय में यह बाहु जैसा मोटा भी हो सकता है। इसमें से स्थान-स्थान पर जड़ें निकलकर नीचे की ओर झूलती रहती हैं। चट्टानों अथवा खेतों

की मेड़ों पर जड़ें जमीन में घुसकर अन्य लताओं को जन्म देती हैं। गिलोय का उपयोग विभिन्न बीमारियों से लड़ने एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने किया जाता है।

अश्वगंधा या असगंध : अश्वगंधा आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में प्रयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पौधा है। आयुर्वेद में अश्वगंधा को मेध्य रसायन भी कहते हैं जिससे हमारी दिमाग की याददाश्त तथा एकाग्रता बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है।

अश्वगंधा को जीर्णोद्धारक औषधि के रूप में जाना जाता है। इसमें एण्टी ट्यूमर एवं एण्टी बायोटिक गुण भी पाया जाता है। मान्यताओं के अनुसार भगवान राम और हनुमान ने इसका उपयोग किया था। आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसे एक वृद्धिप्रद औषधि, जीवनुकर, रसायनिक, तांत्रिक और वृद्धिकर वनस्पति के रूप में सम्मानित किया गया है।

आंवला:- भारत में आंवला के पौधे बहुतायत मिलते हैं। इसके फूल घंटे की तरह होते हैं। इसके फल सामान्यरूप से छोटे होते हैं लेकिन प्रसंस्कृत पौधे में थोड़े बड़े फल लगते हैं। इसके फल हरे, चिकने और गूदेदार होते हैं। स्वाद में इनके फल खट्टे और कसाय होते हैं।

इसके फल पूरा पकने के पहले व्यवहार में आते हैं। वे ग्राही (पेटझरी रोकनेवाले), मूत्रल तथा रक्तशोधक बताए गए हैं। कहा गया है ये अतिसार, प्रमेह, दाह, अम्लपित्त, रक्तपित्त, अर्श, बद्धकोष्ठ में लाभ देते हैं और आयु में वृद्धि करते हैं। मेधा, स्मरणशक्ति, स्वास्थ्य, तेज, कांति तथा सर्वबलदायक औषधियों में इसे सर्वप्रधान कहा गया है। इसके पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने पर मुँह के छाले नष्ट होते हैं। सूखे फलों को पानी में रात भर भिगोकर उस पानी से आँख धोने से सूजन इत्यादि दूर होती है। सूखे फल खूनी अतिसार, आँव, बवासीर और रक्तपित्त में तथा लौहभस्म के साथ लेने पर पांडुरोग और अजीर्ण में लाभदायक माने जाते हैं। आँवला के ताजे फल, उनका रस या इनसे तैयार किया शरबत शीतल, मूत्रल, रेचक तथा अम्लपित्त को दूर करनेवाला कहा गया है।



आयुर्वेद के अनुसार यह फल पित्तशामक है और संधिवात में उपयोगी है। ब्राह्मरसायन तथा च्यवनप्राश, ये दो विशिष्ट रसायन आँवले से तैयार किए जाते हैं। प्रथम मनुष्य को नीरोग रखने तथा अवस्थास्थापन में उपयोगी माना जाता है तथा दूसरा भिन्न-भिन्न अनुपानों के साथ भिन्न-भिन्न रोगों, जैसे हृदयरोग, वात, रक्त, मूत्र तथा वीर्यदोष, स्वरक्षय, खाँसी और श्वासरोग में लाभदायक माना जाता है।

अजवायन :- अजवायन एक झाड़ीनुमा वनस्पति है जो मसाला एवं औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है। छोटे पैमाने पर इसकी खेती की जाती है। अजवायन के बहुत से गुण हैं। इसे अपने साथ यात्रा में भी

रखा जा सकता है। इसका प्रयोग रोगों के अनुसार कई प्रकार से होता है। यह मसाला, चूर्ण, काढ़ा, क्वाथ और अर्क के रूप में भी काम में लायी जाती है। इसका चूर्ण बनाकर व आठवाँ हिस्सा सेंधा नमक मिलाकर 2 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन किया जाये तो पेट में दर्द, मन्दाग्नि, अपच, अफरा, अजीर्ण तथा दस्त में लाभकारी होती है। इसका सेवन दिन में तीन बार करना चाहिए।

अजवायन को रात में चबाकर गरम पानी पीने से सवेरे पेट साफ हो जाता है। अजवायन का चूर्ण बच्चों को 2 से 4 रत्ती और बड़ों को दो ग्राम, गुड़ में मिलाकर दिन में तीन-चार बार दिया जाये तो पेट के कीड़े बाहर निकल जाते हैं। रात को पेशाब आने पर भी इसके सेवन से लाभ होता है। अजवायन के फूल को शक्कर के साथ तीन-चार बार पानी के साथ लेने से पित्त की बीमारी ठीक होती है।

अजवायन को सेंक कर चूर्ण बनाकर शरीर की गर्मी कम होने या पसीना आने पर पैर के तलवों और शरीर पर मालिश करने से उष्णता आती है। हैजे या सन्निपात में शरीर की मालिश करने से उष्णता आती है। अजवायन के 4 रत्ती फूल, 4 रत्ती गिलोय सत्व के साथ मिलाकर चर्म रोगों में ऊँगलियों के काम न करने पर, वायु के दर्द, रक्तचाप और ब्लडप्रेसर में लाभप्रद सिद्ध होता है। अजवायन के फूल को शहद में मिलाकर लें तो कफ आना रुकता है। खाँसी या कफ की दुर्गन्ध खत्म होती है। इसका एक छटांक अर्क पुरानी खाँसी, बड़ी खाँसी तथा कफ में लाभकारी होता है। इसका अर्क या तेल 10-15 बूँद बराबर लेते रहने से दस्त बंद होते हैं। इसका चूर्ण दो-दो ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार लेने से ठंड का बुखार शान्त होता है। अजवाइन मोटापा कम करने में भी उपयोगी होता है। रात में एक चम्मच अजवाइन को एक गिलास पानी में भिगो दें। सुबह छान कर एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर पीने से लाभ होता है। इसके नियमित सेवन से मोटापा कम होता है।

अजवायन वायु को नष्ट करने और बल को बढ़ाने में सहायक है। इसके तेल की मालिश से शरीर दर्द रहित होता है। इसका चूर्ण गरम पानी के साथ लेने से या अर्क को गुनगुना करके पीने से इसका प्रकोप शान्त होता है। इसका प्रयोग प्रसव के बाद अग्नि को प्रदीप्त करने और भोजन को पचाने, वायु एवं गर्भाशय को शुद्ध करने के निमित्त किया जाता है।

पुदीना:- मेंथा वंश से संबंधित एक बारहमासी, खुशबूदार जड़ी है। इसके अंदर कई पोषक तत्व पाए जाते हैं जैसे कि कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, नियासिन, विटामिन ए, विटामिन सी, सोडियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्नीशियम और कैल्शियम आदि।

मेन्थोल का उपयोग बड़ी मात्रा में दवाईयों, सौंदर्य प्रसाधनों, पेय पदार्थों, सिगरेट, पान मसाला आदि में खुशबू हेतु किया जाता है। इसके अलावा इसका तेल यूकेलिप्टस के तेल के साथ कई रोगों में काम आता है। ये कभी-कभी गैस दूर करने के लिए, दर्द निवारण हेतु तथा गठिया आदि में भी उपयोग किया जाता है।

आत्मीयता



श्री कृष्णा कुजूर

लिपिक, संबलपुर मंडल

जब कभी हम किसी से वार्तालाप करें चाहे बड़े हो या छोटे, सबों से मृदुभाषा में करें ताकि हर कोई हमारा वार्तालाप समझ सके और उसे प्रिय लगे। छोटों से प्यार से बोलें, उनके साथ मित्रता से बातें करें, उन्हें कभी ऐसा न लगे कि हम उनसे बड़े हैं, तब वे बड़ों के साथ – साथ छोटों के साथ भी मृदुभाषी होंगे। उनको कभी भी ऊँची आवाज में न पुकारें।

हम देखते हैं कि समाज में कई तरह के लोगों का वर्ग होता है - कोई अपने को फलना-चिलना व्यक्ति कहता है तो कोई अपने को अमका – ढिमका। अब आप तो समझ ही गए होंगे कि हम किस ओर इशारा करना चाह रहे हैं अर्थात् कि जाति-जाति की टिप्पणी।

अगर हर मनुष्य अपने - अपने स्वार्थ को त्याग दे, अपने मन के विकार को उत्पन्न न होने दे तो इस संसार में स्वतः ही चारों ओर शांति छा जाएगी। तब सचमुच इस धरती में ही स्वर्ग बन जाएगा। तब सब लोग एक-दूसरे से प्रेमभाव से जीवन जी रहे होंगे, तभी चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ होंगी। न कोई किसी का बैरी होगा न किसी का दुश्मन सबके सब पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण एक ही परिवार होगा। तभी हम कह सकेंगे पूरी धरा ही हमारा परिवार है अर्थात् कि वसुधैव कुटुम्बकम्।



सीखो

श्रीमती अन्नपूर्णा षडंगी

पति - श्री अजय कुमार षडंगी

फूलों से मुस्काना सीखो
पेड़ों से झुक जाना
पर्वत से मजबूती सीखो
नदियों से बहते जाना
हरे-भरे वृक्षों से सीखो
काम सभी के आना

कोयल की बोली से सीखो
वाणी को मधुर बनाना
शेर से सीखो साहसी बनना
वक से ध्यान लगाना
छोटी सी चींटी से सीखो
मेहनत करके खाना।

जीवन: एक अनमोल उपहार



श्री निरुपम कर्माकार
लेखापरीक्षक

मनुष्य के जीवन को बहुत ही अनमोल उपहार माना जाता है। इस संसार में आया हुआ हर एक व्यक्ति अपने जीवन को सदैव यादगार बनाने की कोशिश करता है। जीवन एक ऐसा पिटारा है जिसमें हमें अनेक सुख और दुःख मिलते हैं, अनेक खुशियों और दुःख लम्हे होते हैं परन्तु यही जीवन हमें अपने मूल्य को समझने की और अपनी सीमाओं को छोड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

जीवन एक यात्रा की तरह है, जिसमें हम अनेक पड़ावों से गुजरते हैं। हमारा जीवन बचपन से लेकर बुढ़ापे तक चलता रहता है। इस यात्रा में हमारे अनुभव, ज्ञान, संघर्ष और सुख-दुख हमें सही मार्ग दिखाते हैं। हम अपने अनुभवों से सीखते हैं और उनसे अपनी जीवन की दिशा तय करते हैं। जीवन का अर्थ है सीखना, प्रगति करना और स्वयं को सबल बनाना।



जीवन में सफलता और खुशहाली का मूल मंत्र है सकारात्मक सोच और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता। जीवन में हमें नकारात्मकता से दूर रहना चाहिए और सकारात्मकता का सामर्थ्य प्राप्त करना चाहिए। जब हम सकारात्मकता की ओर ध्यान देते हैं, तब हमारे आसपास की दुनिया भी सकारात्मकता से भर जाती है। सकारात्मक सोच हमारे मन को ऊर्जावान और स्फूर्तिशील बनाती है। इससे हम अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं और उसे पूरा करने के लिए अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन में हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वे हमें मजबूत बनाती हैं और हमारी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जीवन की सच्ची महिमा उन मुश्किल वक्तों में छिपी होती है, जब हम उन्हें पार करके आगे बढ़ते हैं। इन कठिनाइयों से लड़कर हम अपनी निर्धारित लक्ष्यों की ओर अग्रसर होते हैं। यदि हम उनसे हार मान लेते हैं, तो हम अपने आप को हार जाते हैं। इसलिए हमें हर कठिनाई को हल करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए और उसके साथ खुद को मजबूत बनाना चाहिए।

जीवन में सुख और दुःख सदैव रहते हैं। हम सभी खुशियों के साथ-साथ कुछ दुःख भी अनुभव करते हैं। दुःख से गुजरना हमें बन्धनों से मुक्त

करता है और हमें आत्मसंयम और सहनशीलता सिखाता है। सुख हमें आनंद की अनुभूति देता है। यह हमारे मन को आनंदित और शांत बनाता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि सुख और दुःख दोनों हमारे जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं और हमें उन्हें स्वीकारने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

जीवन अनुभवों का खजाना है। हमें हर एक पल को जीने की क्षमता देने के लिए आभारी होना चाहिए। हमें अपने जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं की कद्र करनी चाहिए, समय का मूल्य समझना चाहिए और अपने सपनों को पूरा करने के लिए सक्रिय रहना चाहिए। जीवन हमें अपने आप को पहचानने का और सबको प्रेम करने का अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। हमें इसे एक उपहार के रूप में स्वीकार करना चाहिए और उसे अपने सच्चे मूल्य को प्रकट करने का एक अवसर मानना चाहिए।

संक्षेप में कहें तो जीवन एक अनमोल उपहार है जो हमें प्रतिस्पर्धा करने, सीखने, प्रगति करने और सबको साथ लेने की प्रेरणा देता है। यह हमें सकारात्मकता, संघर्ष और सुख-दुःख का अनुभव करवाता है। हमें जीवन का मूल्य समझना और इसे प्रतिस्पर्धा के माध्यम से अपने सपनों की प्राप्ति के लिए उपयोग करना चाहिए। इसलिए हमें अपने जीवन को धन्य मानना चाहिए और हर पल को आनंद और उत्साह से जीने का प्रयास करना चाहिए।



एक रुपया



सुश्री निहारिका साहू

पिता- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

एक महात्मा भ्रमण करते हुए किसी नगर से होकर जा रहे थे। मार्ग में उन्हें एक रुपया मिला। महात्मा तो वैराग्य और संतोष से भरे व्यक्ति थे, भला एक रुपये का क्या करते इसलिए उन्होंने यह रुपया किसी दरिद्र को देने का विचार किया। कई दिनों की तलाश के बाद भी उन्हें कोई दरिद्र व्यक्ति नहीं मिला। एक दिन वे अपने दैनिक क्रियाकर्म के लिए सुबह-सुबह उठे तो देखा कि एक राजा



अपनी सेना को लेकर दूसरे राज्य पर आक्रमण के लिए उनके आश्रम के सामने से सेना सहित जा रहा है। ऋषि बाहर आए तो उन्हें देखकर राजा ने अपनी सेना को रुकने का आदेश दिया और खुद आशीर्वाद लेने के लिए ऋषि के पास आकर कहा-‘महात्मन, मैं दूसरे राज्य को जीतने के लिए जा रहा हूँ ताकि मेरा राज्य विस्तार हो सके। इसलिए मुझे विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान करें।’ इस पर ऋषि ने काफी देर सोचा और सोचने के बाद वो एक रुपया राजा की हथेली पर रख दिया। यह देखकर राजा हैरान और नाराज दोनों हुआ लेकिन जब उसे इसके पीछे का प्रयोजन काफी देर तक सोचने के बाद भी समझ नहीं आया तो राजा ने महात्मा से इसका कारण पूछा। महात्मा ने राजा को सहज भाव से जवाब दिया- ‘राजन, कई दिनों पहले मुझे ये एक रुपया आश्रम आते समय मार्ग में मिला था तो मुझे लगा किसी दरिद्र को दे देना चाहिए क्योंकि किसी वैरागी के पास इसके होने का कोई औचित्य नहीं है। बहुत खोजने के बाद भी मुझे कोई दरिद्र व्यक्ति नहीं मिला लेकिन आज तुम्हें देखकर ये ख्याल आया कि इस राज्य में तुमसे दरिद्र तो कोई है ही नहीं, जो सब कुछ होने के बाद भी किसी दूसरे बड़े राज्य की भी लालसा रखता है। यही एक कारण है कि मैंने तुम्हें ये एक रुपया दिया है।’ राजा को अपनी गलती का अहसास हो गया और उसने युद्ध का विचार भी त्याग दिया।

घमंडी कौआ



सुश्री क्रितीका हाजरा

पिता- श्री बासुदेव हाजरा

एक दिन एक कौआ जंगल में भटकता हुआ उड़ रहा था। उसका सामना एक मोर के जोड़े से हुआ। मोर की सुंदरता और उसकी पूँछ देखकर उसके मन में मोर बनने का ख्याल आया। वह अपने मन ही मन में सोचने लगा कि कैसे मोर बनूँ। एक दिन उसे मोर के ढेर सारे पंख मिल गए। कौआ उन पंखों को अपनी पूँछ पर लगाकर मोर की तरह चलने लगा और घमंड से अपने दूसरे दोस्तों से बोला- मैं अब तुम लोगों की तरह बदसूरत नहीं रहा, अब मैं सुंदर बन गया हूँ।

एक दिन कौए का सामना मोर के एक झुंड से हो गया। मोरों ने कौए को मोर समझकर अपनी झुंड में मिला लिया लेकिन जैसे ही कौआ काँव-काँव करने लगा उसकी चोरी पकड़ी गई। मोर ने उसकी नकली पूँछ निकाल दी और उसे मार भगाया।

शिक्षा- कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए।



जीत हासिल करना है

सुश्री श्रद्धा राउत

पिता- श्री पूर्णचन्द्र राउत

नदी की तरह आगे बढ़ना है तुझे,
जीत हासिल करना है तुझे।
सपनों पर रख विश्वास तू,
पाने की उसे रख चाहत तू।
आएगी मुश्किल उसे दे पछाड़,
आएगी चट्टान उसे दे उछाल।
करना है कुछ तो मेहनत करेगा तू,
सोना बनना है तो जलेगा तू।

हिम्मत रख समस्याओं से टकराने की
जरूरत नहीं किसी तूफान से डरने की।
लड़खड़ाएगा तो संभलने की हिम्मत रख,
गिर जाएगा तो उठने का हौसला रख।
याद रहे कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती,
बिना कोशिश किए कभी जय-जयकार नहीं होती।
नदी की तरह आगे बढ़ना है तुझे,
जीत हासिल करना है तुझे।

परिवार और माँ



सुश्री अन्नपूर्णा नायक

पिता- श्री पञ्चु नायक

एक गाँव में एक सुखी परिवार रहता था। उस परिवार में तीन भाई और एक बहन थे। उनके माँ-बाप उन चारों से बेहद प्यार करते थे मगर मँझले बेटे से थोड़ा परेशान थे। बड़ा बेटा पढ़-लिखकर डॉक्टर बन गया और छोटा बेटा भी इंजीनियर बन गया था मगर मँझला बेटा बिल्कुल गँवार और आवारा ही रह गया। अब उनके दो लायक बेटों ने शादी भी कर ली थी और कुछ महीनों के बाद ही उनकी बेटी की भी एक अच्छे घराने में शादी हो गयी थी, मगर



मँझला बेटा अभी भी कुँवारा ही था। वह बिल्कुल अनपढ़ था और मजदूरी करता था इसलिए शादी के लिए कोई भी लड़की नहीं मिल रही थी। उसके माँ-बाप उससे बहुत परेशान हो चुके थे। अब जब भी उसकी बहन अपने मायके आती तो पहले वो अपने डॉक्टर और इंजीनियर भाई से मिलती थी मगर बीच वाले भाई से वो बहुत कम मिलती थी क्योंकि वो उसे ज्यादा पैसे नहीं दे पाता था लेकिन फिर भी वह अपनी बहन से बहुत प्यार करता था। अब उसके पिताजी की मृत्यु हो गयी। उसकी माँ ने सोचा कि कहीं अब किसी के मुँह से बँटवारे की बात न निकले इसलिए अपने ही गाँव की एक सीधी-साधी लड़की से अपने मँझले बेटे की शादी करवा दी। शादी होते ही न जाने क्या हुआ कि अब उसका अनपढ़ बेटा पूरा मन लगाकर काम करने लगा और पहले से कहीं ज्यादा मेहनत भी करने लगा। अब तो उसे कोई भी दोस्त बुलाने आता तो वो उसे यही कहता कि पहले तो मैं जैसे-तैसे अकेला कमाकर खा लेता था मगर अब मेरी शादी हो गई है तो मुझे अपनी पत्नी के लिए कमाना पड़ता है और आनेवाले बच्चों के लिए भी तो कुछ जोड़ना ही पड़ेगा। अब मैं समय बर्बाद नहीं कर सकता।

समय के साथ डॉक्टर और इंजीनियर भाई को लगने लगा कि हमदोनों तो उस गँवार से कहीं ज्यादा कमाते हैं। अच्छा यही होगा कि हम घर और जमीन का बँटवारा कर लेते हैं और उस गँवार से अलग हो

जाते हैं। वो गँवार कभी भी हमारे बराबर नहीं कमा सकता। यही सब सोचकर दोनों भाईयों ने अपनी माँ के लाख मना करने के बावजूद भी बँटवारे की तारीख तय कर दी और अपनी बहन को भी बुलवा लिया और अपने गँवार भाई से भी कह दिया कि आज घर और जमीन का बँटवारा करेंगे। उसी वक्त उनकी बहन भी आ गई। गँवार भाई ने कहा कि तुमलोग बँटवारा कर लो, मुझे जो भी देना हो दे देना। मैं शाम को आकर अंगूठा लगा दूँगा।

बहन ने ताना देते हुए कहा कि तू हमेशा बेवकूफ ही रहेगा, जमीन का बँटवारा आमने-सामने बैठकर ही होता है। उसके दोनों भाईयों ने भी उसे भला-बुरा कहा। इस बीच उसकी माँ ने उसे समझाया कि आज काम पर मत जा, बँटवारा तेरे सामने ही हो तो अच्छा होगा। उसी वक्त वकील भी आ गया। उसने कहा कि कुल मिलाकर दस बीघा जमीन है, इसे कैसे बाँटना है इस बारे में आपलोगों ने कुछ सोचा है क्या? जिसमें आपलोगों की सहमति होगी, उसी तरह से बँटवारे के कागज बना दूँगा।



तभी गँवार भाई ने कहा- वकील साहब, पाँच-पाँच बीघा जमीन मेरे दोनों भाईयों के नाम लिख दो और ये जो हमारा मकान है, ये मेरी प्यारी बहन के नाम कर दो। उसके दोनों भाईयों और बहन ने आश्चर्य से पूछा कि तू अपने हिस्से में क्या लेगा?

उसने कहा कि मेरे हिस्से में मेरी प्यारी माँ है न। फिर अपनी पत्नी की तरफ मुड़कर मुस्कुराकर पूछा- क्यों, मैंने कुछ गलत कहा क्या? उसकी पत्नी ने अपनी सास से लिपटकर जवाब दिया कि माँ से बड़ी वसीयत क्या होगी हमारे लिए।

उनदोनों के इस प्यार ने जमीन-जायदाद के बँटवारे को बदल कर रख दिया। उसकी बहन ने अपने भाई के गले लगकर रोते हुए माफी माँगी। उसके दोनों भाईयों ने भी अपनी बहन से कहा कि इस घर पर जितना अधिकार हमारा है, उतना ही अधिकार तुम्हारा भी है। और रही बात बँटवारे की तो बँटवारा नहीं करने से हमारा जीवन रुक तो नहीं जाएगा। हम बिना बँटवारे के एक साथ भी तो रह सकते हैं, जैसे बचपन में रहते थे। एक साथ मिलकर रहने को ही तो एक अच्छा परिवार कहते हैं। यह कहकर उन्होंने बँटवारे के कागज फाड़कर फेंक दिया। उस दिन के बाद से उनका पूरा परिवार खुशी-खुशी एक साथ रहने लगे।

सपनों को पूरा करने की चाहत



श्रीमती पूजा कुमारी

पति- श्री चंदन कुमार, स.लेप.अ.

आज की कहानी सपनों की प्रेरणा से भरी है। यह कहानी एक लड़के राहुल की है, जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपनी जिंदगी की हर मुश्किल में उत्साहित रहता था। राहुल का सपना था कि वह अपने गांव से बाहर के शहर में अच्छे शिक्षा के साथ एक प्रतिष्ठित डॉक्टर बनें लेकिन उसके परिवार की आर्थिक स्थिति उसे संघर्ष करने को कह रही थी। उसने कभी हार नहीं मानी और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए पढ़ाई की जिम्मेदारी संभाली। धैर्य और मेहनत के साथ वह अपने सपने को पूरा करने की चाह में कठिनाइयों को पार करता रहा। अंत में उसकी मेहनत और लगन ने उसे उसके लक्ष्य तक पहुंचाया। उसने एक प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज में एडमिशन प्राप्त कर लिया और अपने सपने को पूरा करने के लिए कदम आगे बढ़ाया। राहुल की कहानी हमें यह बताती है कि सपनों को पूरा करने के लिए लगन, मेहनत और सही दिशा बहुत महत्वपूर्ण होती है। चाहे वो कितना भी कठिन लगे लेकिन अगर हमारा उत्साह और निरंतर प्रयास हमारे सपनों के पीछे हो, तो हम किसी भी मुश्किल का सामना कर सकते हैं। राहुल की यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सपनों को पूरा करने के लिए केवल जज्बा और उत्साह ही काफी नहीं होते, बल्कि सही दिशा और सही निर्णय भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।



आदत से लाचार मेंढक

सुश्री ज्योत्रीमई पी. मुदुलि

पिता - श्री अक्षय कुमार मुदुलि

एक समय की बात है एक मेढ़क रोज की तरह मक्खियों का शिकार कर रहा था। उसी समय एक सांप वहां से गुजर रहा था। सांप की नजर उस मेढ़क पर पड़ जाती है। सांप सोचता है कि चलो आज के भोजन का प्रबंध हुआ और सांप उस मेढ़क को पीछे की ओर से एक झटके में आधा मुँह में भर लेता है। अब स्थिति ये है कि मेढ़क के शरीर का पीछे का आधा हिस्सा सांप के मुँह में हैं और आगे का आधा हिस्सा मुँह के बाहर। तभी उस मेढ़क के सामने में एक मक्खी उड़ती हुई आती है और मेढ़क सांप के मुँह में दबे होने के बाद भी उस मक्खी को खाने के लिए अपनी जीभ बाहर निकालता है और उसे पकड़ने की कोशिश करता है। इसी को कहते हैं "आदत से लाचार होना" याद रखें आपकी आदतें ही आपका भविष्य तय करती हैं। समय रहते अपनी बुरी आदतों को बदलें।

साथ निकले थे सपने बुनने



श्री निरंजन परिडा

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

साथ निकले थे सपने बुनने
अधूरे ख्वाब को पूरा करने,
वादा था जो जल्द आने का
उसे हर हाल में पूरा करने।

उम्मीद तो बंधायी थी
बच्चों को खिलौनों की,
शहर में कुछ पैसे कमाने
एक बेहतर जिंदगी की।

पल में तबाह हो गयी
हँसती-खेलती जिंदगी,
गले मौत के लग गयी
सपने बुनती जिंदगी।

दो शब्द संवेदना के
घाव भर नहीं सकते,
जो मिले हैं बेवक्त
जिंदगी भर के लिए।

टीस को कुछ कम
कर सकती हो शायद,
न महसूस होने वाली
ये वक्त की मरहम।

कुछ दिनों बाद हम
भूल जायें शायद,
जिंदगी फिर से दौड़ने
लगे पटरी पर शायद!

पथरा गयी आँखें जिनकी
इंतजार करते-करते,
गला सूख गया
जिनका रोते-रोते।

जिनके खो गये अपने
वो कैसे भूल पायेंगे,
बिना जिंदगी उनके
किस हाल में बिता पायेंगे?

क्रोध



श्रीमती नीतु चंद्रा

पति- श्री विभाष चन्द्र, स.लेप.अ.

क्रोध या गुस्सा मानव मन की एक भावना है, जो मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। यदि गहराई से व्याख्या की जाए तो यह भय, लोभ, घमंड या अतिशय मोह के कारण उत्पन्न होने वाली भावना है, जब इनमें से कोई पूरा नहीं होता तो गुस्सा या क्रोध आ जाता है। कभी ऐसा भी होता है कि जिन लोगों को परिस्थितियों को झेलने का साहस और धैर्य नहीं होता उनको गुस्सा आता है। गुस्सा और तूफान एक जैसे होते हैं क्योंकि इनके जाने के बाद ही हमें मालूम होता है कि कितना नुकसान हुआ है। यह एक ऐसा भाव है जो इंसान को अंदर ही अंदर खत्म कर देता है, क्रोध से काम बनता तो नहीं है बल्कि बिगड़ जाता है। यह मूर्खता की निशानी है, ऐसी निशानी जिसमें मनुष्य को पछतावे के सिवा कुछ नहीं मिलता। आज के समय में क्रोध एक फैशन भी हो गया है, हर कोई गुस्सा दिखाने में अपनी शान समझने लगा है। ऐसे में मनुष्य को बहुत कुपरिणाम भुगतना पड़ता है। जहाँ धैर्य का अभाव होता है, वहीं क्रोध का निवास होता है इसलिए अपने स्वभाव में प्रत्येक हालात में धैर्य बनाए रखने का प्रयास करें तो बड़ी आसानी से गुस्से पर काबू पा सकते हैं। क्रोध को अंग्रेजी Anger कहते हैं। Anger कब Danger में बदल जाता है पता ही नहीं चलता।



श्रीमद भगवद गीता में कहा गया है कि क्रोध इंसान के विवेक को वैसे ही ढँक देता है जैसे धूल दर्पण को ढँक देता है। क्रोध बहुत चालाक चीज है, हमेशा कमजोर पर ही आता है। जिन्हें हम अपने से शक्तिशाली समझते हैं उनपर हम क्रोध नहीं करते। नौकर से चाय का कप टूट जाए, तब क्रोध आ जाता है लेकिन जमाई के हाथों टूटे तब क्रोध कैसे कंट्रोल हो जाता है। साथ ही यह भी कहना अतिशयोक्ति न होगी कि कभी-कभी सही के लिए। अन्याय के विरुद्ध क्रोध करना गलत नहीं है। महात्मा गाँधी के उस क्रोध से

तो हम सभी वाकिफ है जो उन्हें दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन से यात्रा के दौरान आया था। उनके पास फर्स्ट क्लास का टिकट था लेकिन अंग्रेज उन्हें जबर्दस्ती फर्स्ट क्लास में यात्रा नहीं करने देना चाहते थे। गांधी को क्रोध आया और उन्होंने अंग्रेजों का हुकुम मानने से इन्कार कर दिया। अंग्रेजों ने उन्हें ट्रेन से फेंक दिया और उसके बाद क्या हुआ वह इतिहास के पन्नों में दर्ज है। दबाया जा रहा हो, अन्याय किया जा रहा हो और आपके साथ नाइंसाफी की जा रही हो तो अपना हक माँगना, आवाज उठाना या क्रोध करना अनुचित नहीं है।



अब हम क्रोध निवारण के बारे में बात करते हैं-

1. हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखना सीखें :- सबसे जरूरी है कि हमें अपने ऊपर ज्यादा नियंत्रण हो। हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखना है। इसके लिए व्यायाम, प्राणायाम, योग एवं अच्छे विचारों से अपने को भरते रहना है। धैर्य का अभ्यास रोज करना पड़ता है तब धैर्य की गहराई बढ़ती है।
2. अपनी सोच पर नजर रखना :- हम क्या सोच रहे हैं इस पर नजर बनाए रखना है क्योंकि आदमी आज जो सोचता है, वही कल करता है। यह देखते रहना है कि कहीं हम ऐसी बात तो नहीं सोच रहे हैं जो क्रोध को बढ़ावा दे रहा है या जन्म दे रहा है।
3. ज्यादा जजमेंटल न होना :- ज्यादा जजमेंटल होना ठीक नहीं है। इससे आप बहुत जल्दी किसी निर्णय पर पहुँच जाते हैं जो गलत भी हो सकता है। ऐसे में आप अकारण क्रोध का शिकार हो सकते हैं।
4. बहुत अधिक उम्मीद न रखना :- बहुत ज्यादा उम्मीद रखना भी गुस्से का कारण बन जाता है। अतः आप सब कुछ करें लेकिन परिणाम के प्रति आशक्त न हों अन्यथा मनोवांछित फल न मिलने पर गुस्सा आएगा।

ये सब उपाय हैं जिन्हें अपनाकर हम क्रोध पर नियंत्रण कर सकते हैं। क्रोध पर नियंत्रण करने के लिए सबसे पहले ये विचार मन में मजबूत होना जरूरी है कि क्रोध बुरी बला है अन्यथा हम शांति की तरफ नहीं बढ़ पाएँगे।

मैं अपने लेख का समापन महान मध्यकालीन कवि संत कबीर दास के दोहे से करना चाहूँगी :-

जहाँ दया वहाँ धर्म है, जहाँ लोभ वहाँ पाप।

जहाँ क्रोध वहाँ काल है, जहाँ क्षमा वहाँ आप ॥

पढ़



श्री विभाष चन्द्र

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पे जी सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि अपनी जिंदगी को ज्यादा सार्थक बना सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि गैरों की जिंदगी में खुशियों के रंग बिखेर सके।
 तू पढ़, पर तू सिर्फ इसलिए न पढ़ कि अच्छी नौकरी पा सके, कुछ अच्छा कमा सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि मजबूत बन खुद का और दूसरों का भी सम्बल बन सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि जिसकी जिंदगी में अंधियारा फैला है वहाँ तू रोशनी फैला सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि तुम्हारा मन-मस्तिष्क निर्भीक बन सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि सही और गलत की पहचान कर सके, सही के लिए आवाज उठा सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि जो न्याय से वंचित हैं उन्हें न्याय दिला सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि निडरता से बुराईयों का सामना कर सके और अच्छाइयाँ फैला सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि अपने और दुनिया को बेहतर बना सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि जिस दुनिया में तूने जन्म लिया उसे ज्यादा उम्दा बना सके।
 तू पढ़, तू इसलिए पढ़ कि आने वाली पीढ़ियाँ पढ़ाई का सही मकसद जान सके।



नालंदा विश्वविद्यालय



श्री मनीष कुमार

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

हाल ही में मुझे भारत के गौरव नालंदा विश्वविद्यालय घूमने का अवसर प्राप्त हुआ। इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेष वर्तमान बिहार राज्य में पटना से 88.5 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व और राजगीर से 11.5 किलोमीटर उत्तर में नालंदा जिले में स्थित हैं। इस विश्वविद्यालय को बख्तियार खिलजी (पूरा नाम इल्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी) के द्वारा जला देने के बाद यह खण्डहर में तब्दील हो गया है। अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा खोजे गए इस महान विश्वविद्यालय के भग्नावशेष इसके प्राचीन वैभव और भव्यता का बहुत कुछ अंदाजा करा देते हैं। मैंने इसे देखने और इसके इतिहास को जानने के लिए एक गाइड को भी साथ में ले लिया। एक नजर में ही इस विश्वविद्यालय के अवशेषों को देखने से अतीत में इसकी भव्यता का पता चल जाता है किन्तु गाइड ने जैसे-जैसे इस विश्वविद्यालय के बारे में सिलसिलेवार जानकारी देना प्रारंभ किया वैसे-वैसे इसके बारे में जानने का मेरा रोमांच और अधिक बढ़ गया। मेरे इस लेख का उद्देश्य महान नालंदा विश्वविद्यालय के गौरवपूर्ण इतिहास से आप सभी को रूबरू कराना है।



खुदाई के पूर्व नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के यात्रा विवरणों से इस विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा-केन्द्र में हीनयान बौद्ध-धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ते थे। प्रसिद्ध चीनी विद्वान यात्री ह्वेनत्सांग और इत्सिंग ने कई वर्षों तक यहाँ सांस्कृतिक व दर्शन की शिक्षा ग्रहण की। ह्वेनत्सांग ने लिखा है कि सहस्रों छात्र नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे और इसी कारण नालंदा प्रख्यात हो गया था। इत्सिंग ने लिखा है कि विश्वविद्यालय के विख्यात विद्वानों के नाम विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर श्वेत अक्षरों में लिखे जाते थे। प्रसिद्ध 'बौद्ध सारिपुत्र' का जन्म यहीं पर हुआ था।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम (450-470 ई.) को प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय को हेमंत कुमार गुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग मिला। गुप्तवंश के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। इसे महान सम्राट हर्षवर्द्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। स्थानीय शासकों तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही इसे अनेक विदेशी शासकों से भी अनुदान मिला।

अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित थीं। केन्द्रीय विद्यालय में सात बड़े कक्ष थे और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे। अभी तक खुदाई में तेरह मठ मिले हैं। वैसे इससे भी अधिक मठों के होने ही संभावना है। मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थीं।

नालंदा विश्वविद्यालय विश्व का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। विकसित स्थिति में इसमें विद्यार्थियों की संख्या करीब 10,000 एवं अध्यापकों की संख्या 2,000 थी। इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। इस विश्वविद्यालय के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्नातक बाहर जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे।

यहां छात्रों के रहने के लिए 300 कक्ष बने थे, जिनमें अकेले या एक से अधिक छात्रों के रहने की व्यवस्था थी। एक या दो भिक्षु छात्र एक कमरे में रहते थे। कमरे छात्रों को प्रत्येक वर्ष उनकी अग्रिमता के आधार पर दिये जाते थे। इसका प्रबंधन स्वयं छात्रों द्वारा छात्र संघ के माध्यम से किया जाता था। यहां छात्रों का अपना संघ था। वे स्वयं इसकी व्यवस्था तथा चुनाव करते थे। यह संघ छात्र संबंधित विभिन्न मामलों जैसे छात्रावासों का प्रबंध आदि करता था। छात्रों को किसी प्रकार की आर्थिक चिंता न थी। उनके लिए शिक्षा, भोजन, वस्त्र, औषधि और उपचार सभी निःशुल्क थे।

समस्त विश्वविद्यालय का प्रबंध कुलपति या प्रमुख आचार्य करते थे जो भिक्षुओं द्वारा निर्वाचित होते थे। कुलपति दो परामर्शदात्री समितियों के परामर्श से सारा प्रबंध करते थे। प्रथम समिति शिक्षा तथा पाठ्यक्रम संबंधी कार्य देखती थी और द्वितीय समिति सारे विश्वविद्यालय की आर्थिक व्यवस्था तथा प्रशासन की देख-भाल करती थी। विश्वविद्यालय को दान में मिले दो सौ गाँवों से प्राप्त उपज और आय की देख-रेख यही समिति करती थी। इसी से सहस्रों विद्यार्थियों के भोजन, कपड़े तथा आवास का प्रबंध होता था।

इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणियों के आचार्य थे जो अपनी योग्यतानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में आते थे। नालंदा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे। 7 वीं सदी में ह्वेनसांग के समय इस विश्वविद्यालय के प्रमुख शीलभद्र थे जो एक महान आचार्य, शिक्षक और विद्वान थे।

प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी और उसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उन्हें तीन कठिन परीक्षा स्तरों को उत्तीर्ण करना होता था। शुद्ध आचरण और संघ के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक था। इस विश्वविद्यालय में आचार्य छात्रों को मौखिक व्याख्यान द्वारा शिक्षा देते थे। इसके अतिरिक्त पुस्तकों की व्याख्या भी होती थी। शास्त्रार्थ होता रहता था। दिन के हर पहर में अध्ययन तथा शंका समाधान चलता रहता था।

यहाँ महायान के प्रवर्तक नागार्जुन, वसुबन्धु, असंग तथा धर्मकीर्ति की रचनाओं का सविस्तार अध्ययन होता था। वेद, वेदांत और सांख्य भी पढ़ाये जाते थे। व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योगशास्त्र तथा चिकित्साशास्त्र भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत थे। नालंदा की खुदाई में मिली अनेक काँसे की मूर्तियों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि कदाचित् धातु की मूर्तियाँ बनाने के विज्ञान का भी अध्ययन होता था। यहाँ खगोलशास्त्र अध्ययन के लिए एक विशेष विभाग था।

नालंदा में सहस्रों विद्यार्थियों और आचार्यों के अध्ययन के लिए नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था, जिसमें 3 लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था। इस पुस्तकालय में सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें थीं। यह 'रत्नरंजक', 'रत्नोदधि', 'रत्नसागर', नामक तीन विशाल भवनों में स्थित था। 'रत्नोदधि' पुस्तकालय में अनेक अप्राप्य हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहीत थीं। इनमें से अनेक पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ चीनी यात्री अपने साथ ले गये थे।

मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज और तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृत्तांतों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्कों के आक्रमणों से बड़ी क्षति पहुँची। इसपर पहला आघात हुण शासक मिहिरकुल द्वारा किया गया। सन 1199 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जलाकर पूर्णतः नष्ट कर दिया। इतिहासकार विश्वप्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय को खिलजी के द्वारा जलाने के पीछे जो वजह बताते हैं वह यह है कि एक समय बख्तियार खिलजी बहुत ज्यादा बीमार पड़ गया था। उसके हकीमों ने उसका काफी उपचार किया पर कोई फायदा नहीं हुआ। तब उसे नालंदा विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग के प्रमुख आचार्य राहुल श्रीभद्रजी से उपचार कराने की सलाह दी गई। उसने आचार्य राहुल को बुलवा लिया तथा इलाज से पहले शर्त लगा दी कि वह किसी हिंदुस्तानी दवाई का सेवन नहीं करेगा। उसके बाद भी उसने कहा कि अगर वह ठीक नहीं हुआ तो आचार्य की हत्या करवा देगा।

आचार्य को यह बात पता चली कि खिलजी प्रत्येक दिन कुरान पढ़ता है और वह पन्नों को थूक लगाकर पलटता है। अगले दिन आचार्य उसके पास कुरान लेकर गए और कहा कि कुरान की पृष्ठ संख्या

इतने से इतने तक पढ़िए आप ठीक हो जाएंगे। वैद्यराज राहुल श्रीभद्र ने कुरान के कुछ पृष्ठों के कोने पर एक दवा का अदृश्य लेप लगा दिया था। खिलजी थूक के साथ मात्र दस बीस पेज चाट कर ही ठीक हो गया। उसको खुशी नहीं हुई अपितु उसको बहुत गुस्सा आया कि उसके हकीमों से इन भारतीय वैद्यों का ज्ञान श्रेष्ठ क्यों है। बौद्ध धर्म और आयुर्वेद का एहसान मानने के बदले उसने नालंदा विश्वविद्यालय में ही आग लगवा दी और कई मूल्यवान पुस्तकों को जला दिया। साथ ही उसने अनेक धर्माचार्य एवं बौद्ध भिक्षुओं को भी मार डाला। कहा जाता है कि विश्वविद्यालय में इतनी पुस्तकें थी (लगभग 9 मिलियन किताबें) की पूरे तीन महीने तक यहां के पुस्तकालय में आग धधकती रही। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी। 13 वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया।



(खुदाई में मिले नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष)

इस विश्वविद्यालय के अवशेष चौदह हेक्टेयर क्षेत्र में मिले हैं। खुदाई में मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था। यह परिसर दक्षिण से उत्तर की ओर बना हुआ है। मठ या विहार इस परिसर के पूर्व दिशा में व चैत्य (मंदिर) पश्चिम दिशा में बने थे। इस परिसर की सबसे मुख्य इमारत विहार थी। आज भी यहां दो मंजिला इमारत शेष है। यह इमारत परिसर के मुख्य आंगन के समीप बनी हुई है। संभवतः यहां ही शिक्षक अपने छात्रों को संबोधित किया करते थे। इस विहार में एक छोटा सा प्रार्थनालय अभी भी सुरक्षित अवस्था में बचा हुआ है। इस प्रार्थनालय में भगवान बुद्ध की भग्न प्रतिमा बनी है। यहां स्थित मंदिर नं. 3 इस परिसर का सबसे बड़ा मंदिर है। इस मंदिर से समूचे क्षेत्र का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यह मंदिर कई छोटे-बड़े स्तूपों से घिरा हुआ है। इन सभी स्तूपों में भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां बनी हुई हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेषों को यूनेस्को के द्वारा 1980 में विश्व धरोहर स्थल में शामिल कर लिया गया। वर्तमान में इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि यह स्थान एशियाई एकता और शक्ति का प्रतीक है। निकट ही नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है।



श्री नवीन कुमार चौबे
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

वो खड़ी किताब पढ़ रही
वो बैठी गेहूँ बीन गई।
वो चौकी पर वहीं बैठ गई
वो नीचे झाड़ू लगा रही।

दोनों ही नन्हीं जान हैं
जिंदगी से अंजान हैं
वो जानने की कोशिश कर रही
वो जिंदगी से लड़ रही।

हर उमर को हक उसका
हक से दिलाना है,
कुछ कदम बढ़ाए हैं
अभी और बहुत दूर जाना है।

वो आँखों में सपने सजाए बैठी
और उड़ान की पूरी तैयारी है
वो आँगन की सफाई में लगी हुई
और अभी रोटी भी बनानी है।

दो कदम की दूरी पर है दोनों
पर फासले मीलों के हैं
कुछ कदम बढ़ाए हैं
कुछ कदम बढ़ाने हैं।

जाने



सुश्री अनुष्का चौबे

पिता - श्री नवीन कुमार चौबे, स.ले.प.अ.

जाने कहाँ की बातें बटोर,
ये हवाएँ कानों को सुनाती हैं।
जाने कहाँ से चाल सीख,
ये लहरें पैरों को गुदगुदाती हैं।

जाने कहाँ - कहाँ की बातें,
ये तारे टिमटिमाते करते फिरें।
जाने कितना सुकून चाँदनी में,
जो चाँद यूँ ही बाँटता चले।

जाने किसने रची ये दुनिया,
कहाँ हुई शुरूआत इसकी।
जाने कितने सवाल जहन में
जाने जवाबदेही किस - किस की।

जाने किसकी शीतलता चुरा,
ये बूंदें तन पर छोड़ जाते हैं।
जाने किन-किन को रास्ता दिया,
ये रोशनी राह बताती है।

जाने कहाँ से शिक्षा पायी,
जो मिट्टी हर कदम अपनाती
जाने किसकी ताकत पायी,
जो धरती अकेली ही बोझ उठाती।

भोलू का भोलापन



सुश्री स्वागतिका साहू

पिता - श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

एक गाँव में एक किसान रहता था। नाम था उसका भोलू। स्वभाव से भी अत्यन्त भोला-भाला था। उसके पड़ोस में राजगायक तेजसिंह रहता था। वह था तो भोलू का हमउम्र लेकिन राजगायक होने के घमंड में भोलू से दोस्ती नहीं रखता था। वह नित्य प्रति सुबह - सुबह गाने का अभ्यास किया करता था।

भोलू के कानों में जब उसके सुरीले गानों के बोल पड़ते तो उसका दिल करता कि वह भी गाए लेकिन उसे गाना आता नहीं था। एक दिन उसने सोचा - क्यों न मैं तेजसिंह से गाना सीख लूँ? जब भी मैं उदास होऊँगा, गाना गाकर मन बहला लिया करूँगा। यह सोचकर वह तेजसिंह के पास गया, बोला - “भाई, तुम बहुत अच्छा गाते हो। मैं भी गाना सीखना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे गाना सिखाओगे?” तेजसिंह उसका मजाक उड़ाते हुए बोला - “अच्छा, तो तुम एक मामूली किसान होकर गाना सीखना चाहते हो?” भोलू उसका व्यंग्य समझ नहीं पाया, बोला -- “हाँ भाई, गाना सीखने की मेरी तमन्ना है। कृपया मुझे सिखा दो।”

“तो ऐसा करो भोलू, वह जो तुम ऊपर, पहाड़ी पर एक गुफा देख रहे हो न, वहीं पर मेरे गुरुजी रहते हैं। उनके पास पाँच वर्ष रहकर मैंने यह विद्या पाई। तुम भी वहीं चले जाओ” - तेजसिंह ने कहा। भोलू उसकी बात सच मानकर उसी समय गुफा में जाने के लिए पहाड़ी के पास पहुँचा। ऊपर जाने का कोई रास्ता नहीं था। भोलू झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाता हुआ, सीधी चढ़ाई चढ़ता हुआ बड़ी मुश्किल से ऊपर पहुँचा। सामने गुफा थी, वह गुफा में चला गया। चारों तरफ अंधकार फैला हुआ था। कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। भोलू आवाज लगाने लगा - “गुरु जी.... गुरु जी।” भोलू ने बार - बार आवाज लगाई लेकिन गुफा में से कोई नहीं बोला, भोलू परेशान हो गया। उसने फिर आवाज लगाई - “कोई है जो मुझे गाना सिखाएगा?” तभी अचानक गुफा में एक रोशनी फैल गई।

यह देखकर भोला बहुत ही आश्चर्यचकित हुआ और उसने यह भी देखा कि सफेद रंग के वस्त्र पहने और हाथ में वीणा लिए एक दिव्य स्त्री उसके सामने खड़ी है। भोलू कुछ बोल नहीं पाया। तब वह स्त्री पूछने लगी-“कौन हो तुम ? यहाँ कैसे आए?”

“जी मेरा नाम भोलू है। मैं नीचे गाँव में रहता हूँ। मैं गाना सीखना चाहता हूँ, इसीलिए यहाँ आया हूँ”

भोलू हकलाते हुए बोला। “लेकिन गाना सीखने के लिए तुम्हें यहाँ किसने भेजा हैं?” - वह स्त्री पूछने लगी। “मेरा पड़ोसी मित्र तेजसिंह राजगायक है। उसने मुझे बताया कि इस गुफा में उसके गुरु रहते हैं, जिनसे उसने संगीत विद्या सीखी थी। उसी ने मुझे यहाँ भेजा है।” - भोलू ने डरते-डरते उत्तर दिया।

वह स्त्री बोली - “अच्छा! तुम्हारे मित्र ने तुम्हें गाना सीखने के लिए यहाँ भेजा है।” “जी हाँ, लेकिन आप कौन हैं? गुरुजी कहाँ हैं” - हिम्मत जुटाकर भोलू ने पूछा। “तुम मुझे ही अपना गुरु समझ लो। मैं तुम्हें गाना सिखाऊँगी” वह स्त्री बोली। “तो आप संगीत की देवी हैं। मेरा प्रणाम स्वीकार करें।” - ऐसा कहकर भोलू उस स्त्री के चरणों में झुक गया। देवी ने उसे आशीर्वाद दिया। फिर भोलू को लेकर अंदर एक विशाल कक्ष में जा पहुँची। वहाँ बहुत से व्यक्ति बैठे हुए थे। कोई वीणा बजा रहा था तो कोई इकतारा। कोई गाने का अभ्यास कर रहा था। देवी बोली - “भोलू, तुम यहाँ बैठ जाओ और इन सबको गाते-बजाते देखो।” यह कहकर देवी दूसरे कक्ष में चली गई। भोलू अब प्रतिदिन वहाँ आने लगा। गुफा में पहुँचते ही देवी उपस्थित हो जाती और भोलू को संगीत कक्ष में ले जाती। इस तरह एक महीना बीत गया। अगले दिन जब भोलू गुफा में आया तो देवी भोलू के सिर पर हाथ रखकर बोली - “भोलू, तुम्हारी शिक्षा पूरी हुई। अब तुम बहुत अच्छे गायक बन गए हो। अब तुम्हें यहाँ आने की कोई जरूरत नहीं।” भोलू बोला - “लेकिन देवी, मेरे मित्र को तो पाँच वर्ष गाना सीखने में लगे थे। फिर मुझे इतनी जल्दी कैसे आ जायेगा?”

“भोलू, जो मन के अच्छे होते हैं, वे केवल परिश्रम करते हैं, फल की तरफ ध्यान नहीं देते। इसलिए उन्हें हर विद्या का ज्ञान प्राप्त होता है। मैंने एक माह में तुम्हें हर तरह से परख लिया है। तुम एक अच्छे गायक बन चुके हो।” - यह कहकर देवी अंतर्ध्यान हो गई। गुफा में अंधकार छा गया। भोलू गुफा से बाहर आ गया। अपनी आवाज को परखने के लिए गुनगुनाने लगा। उसे लगा कि वह अच्छा गा रहा है। उसका हौसला बढ़ा। वह खुलकर गाने लगा। गाते-गाते वह अपने घर जा पहुँचा। राजगायक तेजसिंह उस समय घर पर ही था। उसे भोलू के गाने की आवाज सुनाई दी। सोचने लगा-इतना सुरीला स्वर इस गाँव में भला किसका हो सकता है? वह घर के बाहर निकला। क्या देखता है कि यह तो भोलू गा रहा है। वह हैरान रह गया। भोलू की नजर में भी तेजसिंह पड़ा। वह दौड़कर आया और तेजसिंह के पैरों पर गिर पड़ा। तेजसिंह हड़बड़ा गया। पूछने लगा “भोलू, क्या हुआ?”

“मित्र, मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ। तुमने मुझे ऐसी जगह बताई जहाँ मैं एक महीने में ही गाना सीख गया।”, भोलू विनम्रता से बोला। तेजसिंह कुछ समझा नहीं। वह तो भोलू को बुद्धू बनाकर उस बात को भूल चुका था। हैरानी से पूछने लगा- “तो मैंने तुम्हें कौन सी जगह बनाई थी?”

“अरे भूल गए तुम? सामने वाली पहाड़ी पर गुफा की बात तुम्हीं ने तो बताई थी।” - भोलू उसे याद दिलाते हुए बोला। तेजसिंह को अब सारी बात याद आ गई। बात बनाते हुए बोला - “अच्छा, अच्छा, तो तुमने गाना सीख लिया हमारे गुरुजी से।” भोलू बोला - “मित्र, वहाँ गुरुजी तो नहीं थे लेकिन एक देवी थी। उन्होंने ही मुझे गाना सिखाया था।” तेजसिंह मन ही मन ईर्ष्या कर रहा था। उसने तो वहाँ की गुफा की बात मजाक में की थी लेकिन यह तो वहीं से गाना सीख आया, वह भी इतना अच्छा। वह कुछ बोला नहीं

और अपने घर के अंदर चला गया। अब भोलू प्रतिदिन सुबह अभ्यास करने लगा। तेजसिंह को उसकी मधुर आवाज के आगे अपनी आवाज फीकी लगने लगी। उसे लगा कि यदि भोलू कहीं राजा के पास पहुँच गया तो राजा उसे ही राजगायक बना लेंगे। उसने सोचा- “क्यों न मैं भी अगली सुबह जाकर देवी का आशीर्वाद ले आऊँ ? यह सोचकर वह पहाड़ी की ओर चल दिया। ऊपर गुफा में पहुँचकर तेजसिंह ने आवाज लगाई - “संगीत की देवी, मैं गाना सीखना चाहता हूँ।” देवी प्रकट हो गई, पूछने लगी-कौन हो तुम? “मेरा नाम तेजसिंह है। मेरे पड़ोसी मित्र भोलू ने मुझे यहाँ भेजा है। वैसे मैं राजगायक हूँ लेकिन मैं भी अपने गाने में भोलू जैसी मधुरता लाना चाहता हूँ। आप मेरी आवाज को भी वैसी ही मीठी बना दीजिए।”, तेजसिंह जल्दी से बोला। देवी समझ गई कि तेजसिंह वही है जिसने भोलू को धोखा दिया था। वह बोली - “तेजसिंह, तुम्हारी आवाज में तो भोलू जैसी मिठास आ ही नहीं सकती। तुम्हारे मन में तो छल - कपट भरा हुआ है। मन साफ हो, तभी आवाज भी मधुर होती है। तुम्हें तो मैं भोलू को धोखा देने के अपराध में दंड देती हूँ कि जो संगीत तुमने इतने वर्ष लगाकर मेहनत से सीखा, वह भी तुम भूल जाओ।” । यह कहकर देवी अदृश्य हो गई। तेजसिंह घबराकर गुफा से बाहर आ गया। उसने गला खंखारकर गाना चाहा। लेकिन यह क्या! उससे गाया ही नहीं जा रहा था। एकदम बेसुरी आवाज निकल रही थी।

वह रोता हुआ भोलू के पास पहुँचा। उसे सारी बात बताई। बोला - भोलू मैं अपने किए पर बहुत शर्मिंदा हूँ। कृपया मुझे माफ कर दो। “अरे! दोस्ती में कैसी माफी! माफी हम चलकर देवी से माँगते हैं। वह बहुत दयालु हैं, अवश्य माफ कर देंगी। चलो, उठो, वहीं चलते हैं।” भोलू बोला। वे दोनों फिर गुफा में पहुँच गए। तभी देवी उपस्थित हो गई। पूछने लगी-कहो भोलू, कैसे आना हुआ? देवी को प्रणाम कर भोलू बोला-देवी, मेरे मित्र को माफ कर दो। उसे उसकी मधुर आवाज लौटा दो।

“लेकिन भोलू इसने तुम्हें बुद्धू बनाया था,” देवी बोली। “अब वह अपने किए पर पछता रहा है,” भोलू बोला। “अच्छा, तुम कहते हो तो मैं इसकी आवाज वापस कर देती हूँ,” यह कहते हुए देवी ने तेजसिंह के सिर पर हाथ रखा। बोली-“तेजसिंह विद्या बाँटने से बढ़ती है। छिपाने से और धोखा देने से घटती है। यह बात हमेशा याद रखना।” “जी!” कहते हुए तेजसिंह देवी के चरणों में झुक गया। दोनों मित्र गुफा से बाहर आ गए। तेजसिंह गाने लगा। अब उसकी आवाज अत्यंत सुरीली हो गई थी। वह बहुत खुश हुआ। भोलू से बोला-“भोलू, तुम्हारे कारण मेरी आवाज मुझे वापस मिल गई। मैं तुम्हारा अहसानमंद हूँ। मैं तुम्हें कल ही राजदरबार में ले चलूँगा। अब तुम राजगायक बनकर मान सम्मान पाना। मैं कहीं और चला जाऊँगा।” भोलू बोला- “मित्र मैंने राजगायक बनने के लिए गाना नहीं सीखा। मैं तो केवल अपने मन की खुशी के लिए गाना सीखना चाहता था। मैं तो एक किसान हूँ। खेतीबाड़ी में ही मेरा मन रहता है। राजगायक तो तुम ही थे और तुम ही रहोगे।”

संदेह



श्री बी. रामचन्द्र राव
वरि. लेखापरीक्षक

मेरे मन को एक बात हमेशा खाए जाती है। हम हमेशा हर चीज में संदेह करते हैं, पर क्यों ? जैसे कि सारे रिश्तों में, उदाहरण के तौर पर माँ-बेटे में, ग्राहक और दुकानदार, भाई और बहन में, पति और पत्नी के रिश्ते में। आपने गौर किया होगा इन रिश्तों में संदेह देखा गया है। और क्या है जिसपर कोई संदेह नहीं कर सकता। क्या परम सच है जिसको कोई झुठला नहीं सकता। क्या हमें संदेह करने में अपना जीवन व्यर्थ कर लेना चाहिए? इसी प्रश्न पर मेरे मन में कई बातें उत्पन्न होने लगीं और मैं आप तक इसी पर कुछ बातें एक कथा के माध्यम से उल्लेख कर रहा हूँ।

एक बच्चा जब जन्म लेता है हमें संदेह होता है कि वह बड़ा होगा या नहीं होगा? क्या आपको इसकी उम्र पता है, बड़ा नहीं हुआ या इसके पहले ऊपर से बुलावा आ गया तो इसलिए इसमें संदेह है ? संदेह है या नहीं ? चलो वह बच्चा बड़ा हो गया। बड़ा होने के बाद वह पढ़ेगा या नहीं, इसमें भी हमें संदेह है। संदेह है या नहीं ? चलो पढ़ लिया आगे चलकर वह नौकरी कर पाएगा या कोई रोजगार करेगा। इसमें भी संदेह है, संदेह है या नहीं ? चलो कुछ कर गया। इसकी शादी होगी या नहीं, इसमें भी संदेह है। चलो शादी हो गयी, उसके बच्चे होंगे या नहीं होगी, इसमें भी संदेह है, संदेह है या नहीं ? वह मरेगा या नहीं मरेगा। इसमें संदेह है या नहीं ? ... नहीं, इसमें कोई संदेह नहीं है, क्योंकि जो जन्म लेगा वह एक दिन मरेगा।



उसका मरना निश्चित है। इसलिए मृत्यु सबकी तय है लेकिन हर व्यक्ति इसी से भागता है। जबकि दुनिया में सबसे बड़ी सच्चाई यही है। हाँ या नहीं ? हाँ, इसको कोई झुठला नहीं सकता। मृत्यु में कोई संदेह नहीं है।

यहाँ मैं एक और कहानी में बता रहा हूँ। एक बार एक सेठ जी थे। उनके गाँव में एक बड़े संत आए। वह महाज्ञानी और सिद्ध पुरुष थे। उनके पास गाँव वाले अपनी परेशानी लेकर जाते। यह देखकर वह सेठ सोचे क्यों ना मैं एक बार जाकर मिल आऊँ और अपनी परेशानी बताते हुए एक परीक्षा लेकर आऊँ। सेठ जी संत के पास गए। संत ने पूछा- क्या परेशानी है। सेठ जी बोले - भगवान में एकाग्रता नहीं है। भगवान में मन नहीं

लगता और किसी रिश्ते में भी नहीं लगता। हर किसी से झगड़ा होने लगता है। कभी इससे कभी उससे, मैं बड़ा परेशान रहता हूँ। ये बात सेठ, संत जी से पूछते हैं- आपकी एकाग्रता का क्या राज है? आप भगवान में कब से लगे हैं? मैं देख रहा हूँ आपके पास इतने लोग आ रहे हैं पर आपकी सरलता खत्म नहीं हो रही। अगर मैं होता हो अब तक मैं कितने लोगों से झगड़ लेता। आपकी एकाग्रता का क्या राज है?



संत समझ गए, इसने यह प्रश्न कई संत महाराज या बहुतों से किया होगा और सबने कुछ न कुछ उत्तर दिया होगा, कुछ दिनों तक इस उत्तर को स्वयं पर लागू किया होगा और भूल जाता होगा। वैसे तो वह समझने वाला नहीं है इसलिए उसको अलग तरह से समझाता हूँ। इसको कुछ कहने के बदले कुछ करके दिखाना होगा। उन्होंने कहा- अपना हाथ दिखाओ मैं भविष्य देख सकता हूँ। उसने हाथ दिखाया। तभी संत ने कहा- “तुम भविष्य के बारे में सोच रहे हो। इसमें मन नहीं लगता, उसमें मन नहीं लगता। पहले तुम देखो दस दिनों में तुम्हारी मृत्यु होनी है।” वह सुनकर सेठ डर गया। संत बोले, तुम्हें सोचना है कि तुम्हें क्या करना है। सेठ वहाँ से चला गया। दस दिन हो गए, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह दिन बीत गए और पंद्रहवें दिन वो संत के पास गया और बोला- आपने कहा मेरी मृत्यु दस दिनों में हो जाएगी लेकिन मेरी मृत्यु नहीं हुई है, ऐसा मजाक कौन करता है। संत ने कहा- आपने इन दस दिनों में क्या किया ?

सेठ ने कहा- मैंने तो मन भगवान में लगा लिया, अंत में मेरा सारा ध्यान एकाग्र हो गया और मैंने जिन-जिन लोगों से झगड़ा किया था उन सारे से माफी भी माँग ली। और आधी से ज्यादा जायदाद भी दान में दे दी। फिर संत ने कहा- यही तो तुम कर नहीं पा रहे थे। तुमने अचानक कैसे कर लिया। तब उसने कहा- जिसकी मृत्यु सामने खड़ी हो और कैसे न करो। संत ने कहा- मेरी एकाग्रता का यही राज है। मैं अपनी मृत्यु याद रखता हूँ। अगले पल क्या हो जाए, कब बुलावा आ जाए, किसी को नहीं पता। इसलिए मैं यह कहता हूँ कि जीवन के अगले पल का कोई भरोसा नहीं है। इसलिए मैं कहता हूँ मृत्यु में कोई संदेह नहीं है।

अनुशासन



श्री दीपक कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन में सफल होने के लिए चार 'D' का होना बहुत महत्वपूर्ण है, Desire(इच्छा), Determination(दृढ़ निश्चय), Dedication(समर्पण) और Discipline(अनुशासन)। मेरे विचार से सबसे अधिक महत्वपूर्ण 'D' है- Discipline अर्थात अनुशासन। क्योंकि अनुशासन के बिना इच्छा कभी पूरी नहीं हो सकती, सिर्फ दृढ़ निश्चय रखने से और अपने कामों के प्रति समर्पण रखने से जीवन में सफलता नहीं मिल सकती है, यदि आदमी अनुशासित नहीं हो। उदाहरण के तौर पर मैं यह कहना चाहूँगा कि एक विद्यार्थी एक परीक्षा में सफल होने की इच्छा रखता है, उसे पाने का दृढ़ निश्चय भी करता है, अपने जीवन को उसके प्रति समर्पित भी कर देता है लेकिन यदि स्वयं अनुशासित नहीं है तो कभी भी सफल नहीं हो सकता। मैं यह कहना चाहूँगा कि एक विद्यार्थी ने दृढ़ निश्चय तो कर लिया लेकिन उसे जो पढ़ाई करनी है, जैसे उसे पढ़ने के लिए सिखाया गया है, प्रतिदिन जितने घंटे अध्ययन करने के लिए कहा गया है- अर्थात अपने गुरु की प्रत्येक बातों का अनुशासनात्मक ढंग से अनुसरण नहीं किया है तो कभी भी सफल नहीं हो सकता। अर्थात उसे सफल होने के लिए दृढ़ निश्चय के साथ-साथ अपनी पढ़ाई, अपने खान-पान, अपने स्वास्थ्य, अपने आचार-विचार इत्यादि के प्रति अनुशासित होना पड़ेगा।



हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें अनुशासित रहना अत्यंत आवश्यक है। हम चाहे जो काम करते हैं, हमें अपने कार्यों को करने के लिए जो नियम-कानून बनाया गया है, उसके प्रति अनुशासित रहना है। अपने अधिकारियों, अपने मालिकों के प्रति अनुशासित रहना है, अन्यथा हम अपने कामों को कभी भी सुचारू रूप से नहीं कर सकते और हमें बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है हमारा स्वास्थ्य। कहा जाता है कि “स्वास्थ्य ही धन है”। स्वास्थ्य ठीक नहीं तो कुछ भी नहीं। चाहे हमारे पास कितना भी धन क्यों ना हो, स्वास्थ्य बिगड़ जाने से चुटकी बजाते ही सारा धन निकल जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति अनुशासित होना हमारा परम कर्तव्य है। अपना स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए हमें अनुशासित जीवन जीना पड़ेगा। आजकल की भाग-दौड़ वाली जिंदगी में हमें अनुशासित रहना पड़ेगा। हमारे खान-पान, हमारे आचार-विचार के प्रति हमें अनुशासित होना पड़ेगा। हमें नियमित व्यायाम, नियमित प्राणायाम के प्रति अनुशासित होना होगा।

अब प्रश्न उठता है कि क्या हम अनुशासित हैं? क्या हमारे बच्चे अनुशासित हैं? क्या हमारे परिवार के सभी सदस्य, हमारे साथी-संगति अनुशासित हैं? उत्तर है- नहीं। आज हमें खाने के लिए फास्ट फूड और पैकेट फूड चाहिए। हम परिश्रम करना नहीं चाहते, हम पैदल नहीं चलना चाहते। हमारे बच्चे घर से बाहर खेलने के लिए नहीं जाना चाहते। वे दिन भर घर में बैठकर मोबाइल में वीडियो गेम खेलना चाहते हैं। खाने में मैगी और नूडल के सिवाय कुछ खाना नहीं चाहते। परिवार में सभी के हाथ में एक मोबाइल फोन है। सब अपने-अपने फोन पर व्यस्त हैं। किसी को किसी से बात करने की फुर्सत नहीं। आज हम मोबाइल फोन के गुलाम हो गए हैं, जो धीरे-धीरे हमारे जीवन में, हमारे बच्चों के जीवन में अपने पैर पसार कर हमें बर्बाद करने में जुट गया है। मैं यह नहीं कहता हूँ कि मोबाइल फोन खराब है। उसका हमारे जीवन में बहुत महत्व है। आज मोबाइल से हमारे जीवन में बहुत सारी सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। मोबाइल हाथ में है तो दुनिया मुट्ठी में है, बशर्ते कि हम और हमारे बच्चे उसे अनुशासित रूप से उपयोग करें। मोबाइल के महत्व को समझें। हमारे परिवार, हमारे समाज के लोग उस पर निर्भर न हों बल्कि अनुशासनपूर्वक उपयोग करें।



अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि हमें इस आदत को छोड़ना होगा। हम टेक्नोलॉजी का उपयोग वैसे करें जिससे टेक्नोलॉजी हमारे लिए वरदान साबित हो। सर्वप्रथम हमें अपने आप को बदलना होगा, तभी हमारे बच्चे बदलेंगे, हमारे परिवार के बाकी सदस्य बदलेंगे। हमारे समाज के लोग बदलेंगे। हम अनुशासित होंगे तो हम सफल होंगे, हमारे बच्चे सफल होंगे। हमारे समाज के लोग सफल होंगे और हमारा देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा। अतः हम प्रतिज्ञा लें कि हम “अनुशासित जीवन” व्यतीत करेंगे।

क्या है दोस्ती ?



सुश्री बी. श्यामला

पिता - श्री बी. रामचन्द्र राव, वरि. लेखापरीक्षक

क्या है दोस्ती ?

वही जो दिल तोड़ने का एक रास्ता है,
या वही जो टूटे दिल को फिर से जोड़ता है?

कितने नासमझ थे हम,
ये भी ना समझे कि
कोई अपना नहीं होता इस दुनिया में।
सोचा था बचपन की दोस्ती जिंदगी भर निभाएंगे,
कहाँ पता था कि वो सिर्फ एक वहम था
जो हम सबने पाला था।

ऐसे लोगों से मिली थी जिन्होंने
वादा किया था “ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे।”
आज तो वो मुझे याद भी नहीं करते,
ख्याल तक नहीं करते,
“यह ठीक तो है ना?”

इस मुकाम पर पहुँच गई
कि आज भी खुद से पूछती हूँ
क्या ये वही है जो दिल जोड़ता है,
या खुद को फिर से तोड़ने का एक जरिया बनता है?
क्या है दोस्ती ?

एक कविता हर माँ के नाम



श्री स्वास्तिक षड़ंगी

पुत्र - श्री अजय कुमार षड़ंगी, एम टी एस

घुटनों से रेंगते-रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ
तेरी ममता की छाँव में
जाने कब बड़ा हुआ
काला टीका, दूध-मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है

मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा-साधा, भोला-भाला
मैं ही सबसे अच्छा हूँ
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ



प्रकृति

सुश्री शुभलक्ष्मी नायक

पिता - श्री बुद्धनाथ नायक, लिपिक

हरी - हरी खेतों में
बरस रही हैं बूँदें
खुशी-खुशी से आया सावन
भर गया मेरा घर- आँगन।

ऐसा लग रहा है जैसे
मन की कलियाँ खिल गयीं वैसे
ऐसा कि आया बसंत
लेकर फूलों का जश्न।

धूप से प्यासे मेरे तन को
बूँदों ने दी ऐसी अँगड़ाई
कूद पड़ा मेरा तन-मन
लगता है मैं हूँ एक दामन।

यह संसार है कितना सुंदर
लेकिन लोग नहीं उतने अक्लमंद
यही है एक निवेदन
न करो प्रकृति का शोषण।

आपके पत्र

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी - 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI - 781 029

पत्र सं.हिंदी कक्षा/पत्रिका समीक्षा/2022-23/17
दिनांक: 29.05.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, तीसरी मंजिल, रेल सदन,
सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर,
भुवनेश्वर- 751017 (ओड़िशा)

08 JUN 2023

संदर्भ:- सं.-रा.भा.अ./धर्मपद पत्रिका/2022-23 दिनांक 10/05/2023

विषय: हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 11वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "धर्मपद" 11वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हादिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेमादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं जानकारीपूर्ण लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री बिक्रम महापात्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षक का लेख "विवशता", श्रीमती रोमा कुमारी का लेख "गुड न्यूज के बाद" एवं सुश्री सागरिका साहू का लेख "जीवन का पाठ" प्रशंसनीय हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हादिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

08.06.2023
हिंदी अधिकारी

Telex (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX : 0361-2303142/2305901
E-mail: agcassam@cag.gov.in

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA,
THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं. हिंदी कक्षा/पत्रिका समीक्षा/2023-24/03-1992/13

दिनांक 18.05.2023

सेवा में

हिंदी अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन,
भुवनेश्वर - 751017 (ओड़िशा)

महोदय/महोदया,

विषय : आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11वें अंक की प्राप्ति हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका "धर्मपद" की उत्तरोत्तर प्राप्ति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हादिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
08.05.2023
हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011
क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 14 दिनांक 01.06.2023

प्रति,

हिन्दी अधिकारी / हिन्दी अनुभाग
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017 (ओड़िशा)

विषय - वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ:- पत्र स.- रा.भा.अ./धर्मपद पत्रिका/2022-23 दिनांक 10.05.2023।

महोदय / महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर हिसाब क्या दूँ, आस्था और स्वास्थ्य, गाँव का बचपन, ज़िंदगी, जीवन का पाठ, मानवता, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों से पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हादिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्षा



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



सं. प्रिनलेप(के)/हिंदी अनुभाग/14-02/2023-24/34

दिनांक : 16.05.2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
ओड़िशा,
भुवनेश्वर-751 017

विषय : वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "धर्मपद" का 11 वां अंक इस कार्यालय में मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं विशेषतः श्री दीपक कुमार दास कृत "आस्था और स्वास्थ्य", श्रीमती नेहा कुमारी कृत "एक का अभाव" एवं श्रीमती सुषमा चौधरी कृत "मानवता" अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,
16.05.2023
हिंदी अधिकारी

लेखापरीक्षा बवन,



"LEKHA PARIKSHA BHAVAN"

आपके पत्र



कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं. हि.क. / ले. व ह. / पत्रिका समीक्षा / 2023-24 / 50

दिनांक: 22.05.2023

सेवा में,

राजभाषा अनुभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751 017

विषय:- आपके द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक के ई-प्रति की पावती;
महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं सार्वजनिक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में सक्षम भूनिष्ठ निमग्न रहेगा जिससे उच्चतम भविष्य की शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171 003 दूरभाष: 0177-2652502 / 2651033, फैक्स: 0177-2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail: agae@himachalpradesh@gov.in



कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit-II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्षा/पत्रिका पावती/ 29

दिनांक:- 29/05/2023

सेवा में,

29 MAY 2023

हिंदी अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर- 751 017 (ओडिशा)

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" 11 वें संस्करण की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कवितारं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगती, वो हैं- हिसाब क्या है, गाँव का बचपन, गुरु के गुरु, मानवता आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उच्चतम भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स, डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: 033-2332-4016, FAX: 033-2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cg.gov.in



भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date:

प्रति,

राजभाषा अनुभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, भुवनेश्वर,
751017 (ओडिशा)

विषय:- वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।
संदर्भ:- संख्या: दिनांक 11.05.2023

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - राँध, जीरो प्याइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं./Phone No: 0281-2441600-06 (पीबीएक्स/PBX) फैक्स नं./Fax No: 0281-2456238 ईमेल/Email: agueg@gujarat@gov.in

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2023-24/ 32

दिनांक: 17.05.2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, भुवनेश्वर
ओडिशा - 751 017

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका "धर्मपद" के 11 वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। सार्वजनिक पत्रिका में सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के माध्यम से "ग" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। निःसंदेह पत्रिका राजभाषा हिंदी के साथ-साथ कार्यालयी कार्यों की लेखन क्षमता को बढ़ावा देने में भी एक प्रेरक की भूमिका अदा करेगी। पत्रिका का मुख पृष्ठ बहुत सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाता है और ओडिशा राज्य की लोक संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका में सभी बाल कलाकारों द्वारा बनाई गई चित्रकारीयें बहुत ही सुंदर हैं। उन्हें उनके सुन्दर भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ "निरंतर" परिवार को आपकी पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की कुछ झलकियाँ



सेवानिवृत्ति



श्री प्रदीप कुमार साहू
'कल्याण सहायक' के पद से सेवानिवृत्त होने पर स्मृतिचिन्ह प्राप्त करते हुए।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिंदी में करें।
- फाइलों पर विषय अनिवार्य रूप से हिंदी या द्विभाषी में लिखें।
- कंप्यूटर में यूनिकोड/देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिंदी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में दें।
- सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी में उपयोग करें।
- मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिंदी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- हिंदी न जानने वालों को हिंदी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें।